ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

फाल्गुन-चैत्र संवत् नानकशाही ५५५-५५६ मार्च 2024 वर्ष १७ अंक ७

तख्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब

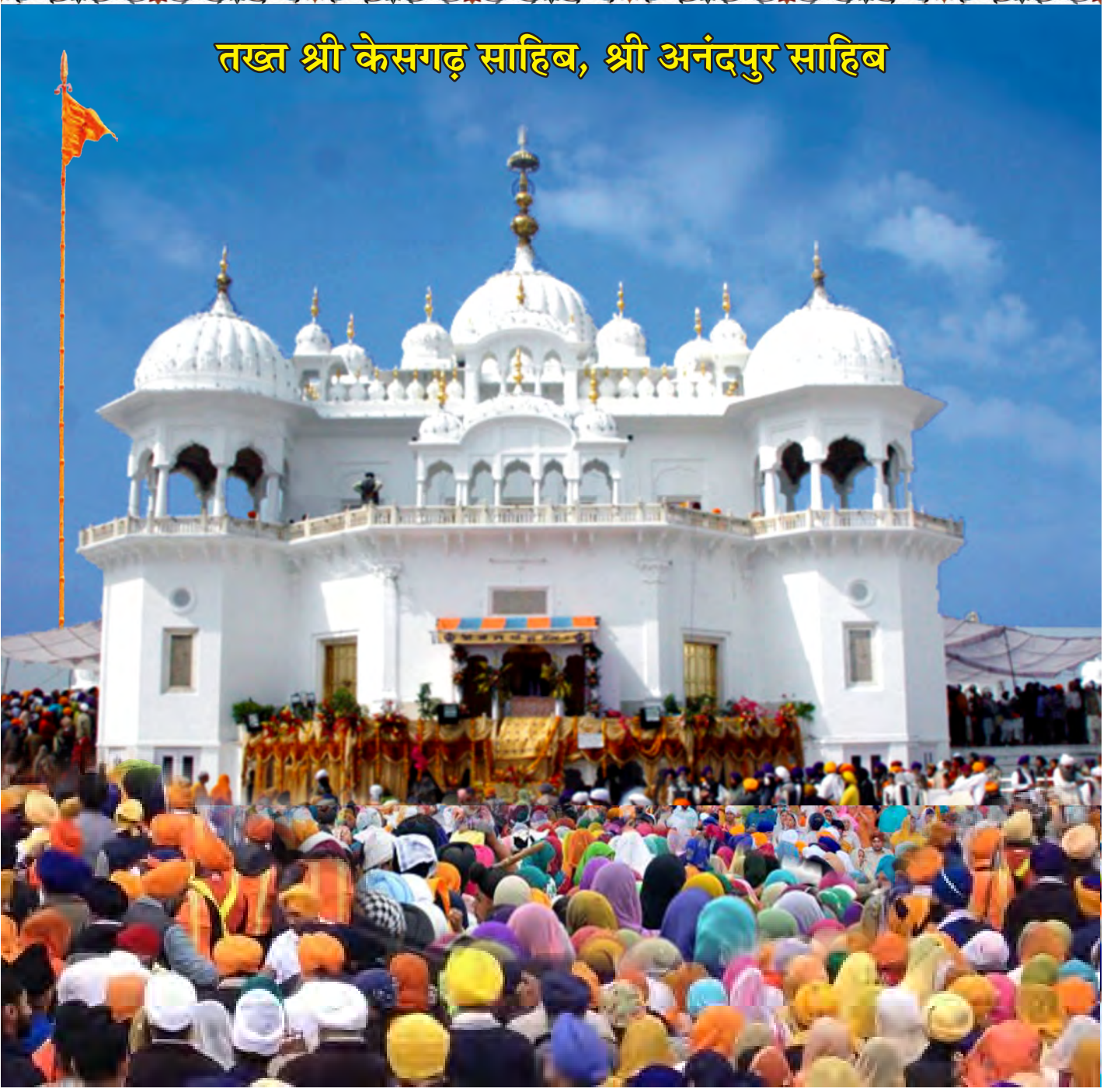

अकाली फूला सिंघ जी

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

फाल्गुन-चैत्र संवत् नानकशाही 555-556
वर्ष 17 अंक 7 मार्च 2024

संपादक : सतविंदर सिंह
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर साहिब -143006

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 6

श्री गुरु नानक देव जी के हमसफर : भाई मरदाना जी 9
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'

होली से होला-महल्ला 12
- ज्ञानी सुरजीत सिंघ

भाई बिधी चंद छीना : गुरु का सीना 17
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल

दिल्ली फतह के सिक्ख महानायक : सरदार बघेल सिंघ 20
-डॉ.सत्येंद्र पाल सिंघ

. . . जत्थेदार अकाली फूला सिंघ 25
-डॉ. चमकौर सिंघ

बाबा बिकरम सिंघ 29
-डॉ. किरपाल सिंघ (दिवंगत)

भक्ति का निज रूप है नारी, शक्ति का स्वरूप है नारी 36
-डॉ. मनजीत कौर

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु 41
-बीबी जशनप्रीत कौर

खबरनामा 49

गुरबाणी विचार

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥
जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२ ॥ *(पन्ना १३३)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में चेत्र मास की ऋतु और इससे संबंधित क्रियाओं के बारे में सांकेतिक वर्णन करते हुए मनुष्य-मात्र को मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस काल-खंड को प्रभु-नाम-सिमरन द्वारा सफल करने का निर्मल उपदेश देते हुए गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि चेत्र मास में मालिक परमात्मा को स्मरण किया जाए तो बहुत ही गहरी प्रसन्नता मिलती है। यदि इस समय अच्छे मनुष्यों की संगत करते हुए जिह्वा से प्रभु-नाम जपा जाए तो मालिक स्वामी प्राप्त हो जाते हैं। जिसने ऐसा सुकर्म कर प्रभु को पा लिया है उसी मनुष्य का इस संसार में आना सफल गिना जाए, चूंकि मनुष्य-जीवन का मूल प्रयोजन यही है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ *(पन्ना १२)*

गुरु पातशाह प्रत्येक क्षण प्रभु-नाम को समर्पित करने का दिशा-निर्देश बख्शिश करते हुए बाणी में फरमान करते हैं कि परमात्मा की पावन स्मृति के बगैर यदि एक पल भी जीया जाए तो सारा जीवन ही व्यर्थ हो जाता है। जो परमात्मा जल में, आकाश में, धरती पर व्याप्त हो रहा है,

यदि ऐसा मालिक मनुष्य को याद ही न आए तो उसका कितना दुर्भाग्य होगा! दूसरी ओर जिन्होंने परमात्मा को याद किया है वे बहुत ही भाग्यशाली अथवा महान हैं। हे नानक! ऐसे सुजनों को देखकर मन परमात्मा के दीदार की कामना करता है, मन में उसके दीदार की प्यास बनी रहती है। चेत्र मास में जो मुझे परमात्मा से मिला दे मैं उसके चरण छू लूँ!

बारह माहा मांझ की पहली पावन पउड़ी, जिससे यह पावन बाणी प्रारंभ होती है, इस प्रकार है :

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥
स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥
नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१ ॥ *(पन्ना १३३)*

अर्थात् हे परमात्मा! हम अपने कर्मों की कमाई के अनुसार अर्थात् सुकर्मों को निभाने में कुछ कमी रह जाने के कारण आपसे बिछड़े हुए हैं। सनम्र विनती है कि आप अपनी कृपा कर हमें अपने साथ मिला लो। चारों दिशाओं में भटकने के उपरांत हम अंत में आपकी शरण में आए हैं। दूध देने से रहित गाय किसी काम नहीं आती। जल न मिले तो वृक्ष अथवा पौधा सूख जाता है। यदि असल मित्र-प्रभु का नाम ही न मिल पाया तो आराम कहां? जिस हृदय रूपी घर में प्रभु-पति प्रकट नहीं होते वह हृदय रूपी घर भट्ठी जैसा दुखदायक प्रतीत होता है। प्रभु मालिक के बिना मनुष्य रूपी स्त्री का सारा शृंगार व्यर्थ है अर्थात् बाहरी दिखावे के सभी प्रयास निष्फल हैं। मालिक के बिना बाहरी रूप से मित्र दिखने वाले सभी जन शत्रु हैं। ऐसी स्थिति में हृदय से एक ही विनती निकलती है कि हे नानक! कृपा कर अपना नाम प्रदान कर दो! हे मालिक! मुझे अपने साथ मिला लेना, क्योंकि एक आप ही का नाम सदैव स्थिर है!

संपादकीय

सिक्ख सैनिक-अभ्यास का सक्रिय दृश्य : होला-महल्ला

होला-महल्ला के पवित्र और ऐतिहासिक पर्व की देश-कौम को बहुत महान देन है। गुरु साहिबान द्वारा सृजित किए संकल्प, सिद्धांत, परंपराएं, खालसाई पर्व आदि मानवता के लिए रौशन-मीनार हैं। ये मानवता में रूहानी आनंद और शारीरिक एवं मानसिक निरोगता पैदा करते हैं। ये स्वार्थ-भावना में ग्रसित तथा सोई हुई ज़मीरों को झकझोर कर उन्हें जगाने का सामर्थ्य रखते हैं। ये भारतीय परंपरा के निरर्थक और बासी रीति-रिवाज़ों से खालसा पंथ को अलग कर 'सिक्ख एक निराली कौम है' की गवाही भरते हैं।

होला-महल्ला का खालसयी पर्व कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब की पवित्र धरती पर युद्ध-अभ्यास के रूप में शुरू किया। गुरु जी का युद्ध उनके साथ था जो 'पंथ प्रचुर करबे' में रुकावट खड़ी करते थे, जो इस जगत में घिनौने कर्म करते थे, जो धर्मी-राज की स्थापना में रुकावट थे, जो गरीब जनता को तंग करते थे। १६९९ ई. में गुरु जी ने खालसा पंथ की सर्जना की और १७०० ई. में खालसा फौज के युद्ध-अभ्यास के लिए होला- महल्ला की शुरूआत की। सारांशत: बुराई को खत्म कर नेकी का राज्य स्थापित करने के लिए गुरु जी ने जहां मानवीय आत्मिक विगास के लिए बाणी उच्चारण की वहीं युद्ध-अभ्यास हेतु होला-महल्ला का पर्व शुरू करवाया। होला का अर्थ है-- हल्ला बोलना या हमला करना और महल्ला का अर्थ है-- हमलावरों के उतरने की जगह अर्थात् जिस जगह पर हमलावरों कब्ज़ा जमाने के लिए हमला किया है। इस तरह दोनों के शब्दों के सुमेल से शब्द बना -- 'होला-महल्ला'। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी खालसा फौज को दो दलों में बांट देते। एक दल निश्चित स्थान पर काबिज़ हो जाता और दूसरा दल उस स्थान पर अपना कब्ज़ा जमाने की कोशिश करता।

हज़ारों वर्षों से भारत में बदी पर नेकी की जीत के प्रतीक के रूप में होली मनाई जाती रही, परंतु व्यवहारिक रूप में कभी भी नेकी की जीत न हो सकी तथा बदी और भी प्रचंड रूप धारण करती रही। प्रह्लाद भक्त के परमात्मा पर विश्वास और उसके भक्ति-भाव की तो उपमा की जाती रही, परंतु संभूक को किसी ने भक्ति न करने दी। उसके लिए तो धर्म के रक्षक ही हिरण्यकशिपु बन गए। इस देश में भक्ति करते हुए ईश्वर के भक्तों को धार्मिक स्थानों में से धक्के मार कर बाहर निकाला जाता रहा, भक्ति करने वालों की जीभ काटी जाती रही, भक्ति श्रवण करने वालों के कानों में सिक्का पिघला कर डाला जाता रहा। ऐसे व्यवहारिक घटनाक्रम में नेकी की बदी पर जीत के जश्न केवल ढोंग-मात्र नहीं

तो और क्या थे!

कलगीधर पिता जी को ऐसे तथाकथित त्योहार पसंद नहीं थे। उन्होंने कहा कि मेरा खालसा बदी पर नेकी के लिए 'करनी-प्रधान' होगा। हम बदी पर नेकी की जीत स्थापित करके दिखाएंगे। खालसा पंथ धरती पर से बदी का खातिमा कर नेकी का राज स्थापित करने के लिए सैनिक-अभ्यास के रूप में इस दिन को होला-महल्ला के रूप में मनाया करेगा। खालसा पंथ की सर्जना और स्वस्थ खालसयी त्योहारों के कारण यह सत्य साबित हुआ। हज़ारों वर्षो में जिस बदी पर नेकी की जीत न हुई वह खालसा पंथ ने कर दिखाई। मुगल राज की जड़ें उखाड़ कर खालसयी राज स्थापित किया। यह एक सच्चाई है कि ऐसा राज स्थापित करना हिंदवासियों के लिए कभी संभव न था, क्योंकि उनके अंदर ''चिड़िओं से मैं बाज़ तुड़ाऊं'' जैसी भावना किसी अगुआ ने पैदा ही नहीं की थी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा शुरू करवाया होला-महल्ला का सैनिक-अभ्यास आने वाले समय में बड़ी-बड़ी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की फौजी प्रशिक्षण संस्थाओं को पराजित कर गया। इस सैनिक- अभ्यास में से जंग के पैंतरे सीख कर खालसा फौज ने सभरावां जैसे मैदान में अति आधुनिक प्रशिक्षण प्राप्त अंग्रेज़ फौज का नींबू की भांति लहू निचोड़ दिया। इससे पहले इसी सैनिक-अभ्यास के कारण चालीस सिंघों ने चमकौर की गढ़ी में दस लाख फौज का मुकाबला कर दिखाया। इसी सैनिक-अभ्यास के परिणामस्वरूप हज़ारों साल की गुलामी के बाद देश को आज़ाद करवाया गया। इसी सैनिक-अभ्यास ने जनरल हरबखश सिंघ, चीफ मार्शल अरजन सिंघ, जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा), जनरल बिकरम सिंघ, जनरल सुबेग सिंघ, निरमलजीत सिंघ (सेखों) जैसे बहुत-से सिक्ख जरनैल तैयार किए, जिन्होंने अपनी बहादुरी दिखाकर देश की आबरू को पैरों तले रौंदने से बचाया। जनरल हरबखश सिंघ ने सन् १९४७-४८ की भारत-पाकिस्तान की जंग, सन् १९६२ की भारत-चीन की जंग, सन् १९६५ की भारत-पाकिस्तान की जंग में गुरु साहिब की बख़्शिश का सदका देश की पीठ न लगने दी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि १९६२ ई. की जंग में सिक्ख रेजिमेंट को छोड़ कर बाकी सभी फौजी भगौड़ा हुए थे। १९६५ ई. की जंग में भी डोगरा रेजिमेंट के अधिकारी और सिपाही अपने हथियार फेंक कर, जान बचा कर भाग निकले थे। फिर सिक्ख बटालियन मैदान में उतरी और पाकिस्तान के २४० पैटन टैंकों के आगे सीना तान कर टैंकों को तबाह कर दिया। जनरल चौधरी ने तो यहां तक हुक्म जारी कर दिया था कि पीछे हट कर सतलुज दरिया को युद्ध-रेखा बना लो, मगर जिसके पूर्वजों ने कलगीधर पिता जी से सैनिक-अभ्यास के पैंतरे सीखे हों वो इतनी जल्दी हार कैसे मान सकता था! जिसके पूर्वजों ने श्री हरिमंदर साहिब की सुरक्षा के लिए शहादत दी हो वह श्री हरिमंदर साहिब को छोड़कर पीछे कैसे हट सकता था!! गुरु के सिक्ख जनरल हरबखश सिंघ ने वाहगा तथा खेमकरण बार्डर पर खड़े होकर ही पाकिस्तानी फौज का सामना किया था। १९७१ ई. में भी सिक्ख रेजिमेंटों को छोड़ बाकी भारतीय फौज भगौड़ा थी। सरदार

जगजीत सिंघ (अरोड़ा) ने सिक्ख फौज के साथ पाकिस्तानी फौज को आत्मसमर्पण करने के लिए मज़बूर कर दिया। यह सब कलगीधर पिता जी के खंडे-बाटे के अमृत की शक्ति और होला-महल्ला के सैनिक-अभ्यास का ही परिणाम था।

बेहद अफसोस कि भारतीय फिल्म नगरी सोची-समझी साज़िश के अधीन इस मार्शल कौम को हमेशा अपनी फिल्मों में मज़ाक का पात्र बना कर पेश करती है। कुछ वर्ष पूर्व 'सर्जिकल स्ट्राईक' पर एक फिल्म बनाई गई है। फिल्म का नाम है -- 'उड़ि'। इस फिल्म के शुरूआती दृश्य में ही एक फौजी हेलीकाप्टर में बहुत-से कमांडो फौजी बैठे 'सर्जिकल स्ट्राईक' के लिए जा रहे हैं। उन फौजियों में एक सिक्ख फौजी भी है। बाकी सभी फौजी चैतन्य बैठे दिखाये गए हैं, परंतु सिक्ख फौजी मुंह खोल कर ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे मारता हुआ दिखाया गया है। सभी फौजी सोए हुए सिक्ख फौजी की तरफ देख रहे हैं। एक गैर-सिक्ख फौजी अफसर उस सिक्ख फौजी के मुंह में रुई की बत्ती डालता है, जिससे सभी फौजी ठहाका मार कर हंसते हैं। उधर सिनेमा हॉल में भी हंसी छिड़ जाती है। हो सकता है, हंसने वालों में कुछ भोले सिक्ख भाई भी हों, परंतु इस दृश्य को देखकर कई सिक्खों के हृदय को ठेस पहुंची है। यह अति निंदनीय है। यदि इस फिल्म के निर्देशक ने इस कहानी को निर्देशित करने से पहले भारत की जंगों का इतिहास पढ़ा होता और उसकी ज़मीर जिंदा होती, तो उसे यह दृश्य तैयार करते समय अवश्य लज्जा आती। किसी विशेष मुहिम पर जाते समय कोई कमांडो खर्राटे मारकर सोया हुआ हो, यह बेहद गैर-जिम्मेदाराना हरकत है। एक सिक्ख कमांडो फौजी को इस तरह उपहासास्पद किरदार में दिखा कर पूरी सिक्ख कौम का मज़ाक उड़ाया गया है। इन लोगों को इस बात का एहसास होना चाहिए कि यदि सिक्ख फौजी ड्यूटी के दौरान इस प्रकार खर्राटे मारते तो महमूद गज़नवी से भारत की २२०० बहू-बेटियों को कौन छुड़ाता ? यदि सिक्ख फौजी ड्यूटी के दौरान खर्राटे मारते होते तो १९४७-१९४८, १९६२, १९६५ ई. की जंग कौन जीतता? यदि सिक्ख फौजी ड्यूटी के दौरान खर्राटे मारते होते तो १९७१ ई. में जनरल नियाज़ी को घुटने टेकने पर मज़बूर कौन करता? यदि सिक्ख फौजी ड्यूटी के दौरान खर्राटे मारते तो कारगिल की जंग कौन जीतता ? यदि सिक्ख फौजी ड्यूटी के दौरान खर्राटे मारते तो आज देश का नक्शा कुछ और ही होता। पता नहीं, इन बेगैरत लोगों की नफरत कब थमेगी। फिल्म बनाने वाले निर्देशक या इसे पास करने वाले सेंसर बोर्ड ने कभी होला-महल्ला के करतब देखे होते, तो उन्हें पता होता कि सिक्ख फौजी उस कौम के वारिस हैं जिसके साठ वर्षीय बुजुर्ग भी दो-दो घोड़ों पर खड़े होकर पूरी रफ्तार के साथ भागते हुए अपनी शस्त्र-विद्या के करतब दिखाते हैं; जिसके अस्सी वर्षीय बुजुर्ग शूरवीर भी शीश हथेली पर रख कर रण-भूमि में जूझते हुए दुश्मनों को मार भगाते हैं। सिक्खों को नीचा दिखाने की यह सोच बेहद घटिया है जो सिक्खों को अपने ही घर में बेगानेपन का एहसास दिलाती है।

श्री गुरु नानक देव जी के हमसफर : भाई मरदाना जी

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

भाई मरदाना जी का पहला नाम भाई 'दाना' था। उनका जन्म ६ फरवरी, सन् १४५९ ई. को गांव राय भोय दी तलवंडी के निवासी चौभड़ जाति के मिरासी भाई मीर बादरा तथा माता लक्खो के घर हुआ था। भाई मरदाना जी श्री गुरु नानक देव जी से लगभग दस वर्ष बड़े थे। मिरासियों की अमीर संगीत परंपरा की बदौलत उन्हें संगीत की सौगात अपने पैतृक घराने से ही मिली। वे रबाब बहुत अच्छा बजाते थे और गाते भी बहुत मधुर स्वर में थे। भाई मरदाना जी और रबाब को कभी भी अलग-अलग नहीं देखा व समझा जा सकता।

श्री गुरु नानक देव जी ने लोगों के दुख व कष्ट दूर करने हेतु, उन्हें कर्मकांडों के चुंगल में से बाहर निकालने हेतु और लोगों को सच्चा नाम-दान एवं ज्ञान का निधान देने हेतु अपनी चार उदासियों (धार्मिक यात्राओं)के दौरान देश-विदेश में लगभग चालीस हजार मील लंबा सफ़र पैदल तय किया था। उनकी इन चारों उदासियों में भाई मरदाना जी उनके साथ उनके हमसफ़र बनकर चले थे। जहां श्री गुरु नानक देव जी का नाम अति आदरपूर्वक एवं श्रद्धापूर्वक लिया जाता है, वहीं भाई मरदाना जी को भी अति स्नेह, प्यार व सम्मान के साथ याद किया जाता है। यह कोई मामूली बात नहीं है कि लगभग सैंतालीस वर्षों तक उन्हें श्री गुरु नानक देव जी की संगति में रहने का परम सौभाग्य व सुअवसर प्राप्त हुआ।

भाई मरदाना जी द्वारा रबाब बजाना तथा मीठे-मधुर स्वर-सुर-ताल में गाना गुरु जी को बहुत पसंद आया। यहीं से उन दोनों की अटूट मित्रता का आगाज़ हो गया। प्रिंसीपल सतिबीर सिंघ वर्णन करते हैं-- ''बहुत कम लोगों को पता है कि विश्व-प्रसिद्ध गायक तानसेन के गुरु हरिदास भाई मरदाना जी के ही शिष्य थे।''

भाई मरदाना जी के बारे में भाई गुरदास जी यूं उच्चारित करते हैं :

भला रबाब वजाइंदा मजलस मरदाना मीरासी।

(वार ११:१३)

भावार्थ यह है कि मजलिस में कोई अन्य भाई मरदाना जी की भांति रबाब नहीं बजा सकता था।

भाई गुरदास जी अपनी एक अन्य वार में यह भी कथन करते हैं :

इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।

(वार १:३५)

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

भाई मरदाना जी की मित्रता गुरु जी के साथ बचपन में ही हो गई थी। गुरु जी द्वारा मिले भरपूर सम्मान व प्यार के कारण यह मित्रता अंतिम सांस तक कायम रही। यह मित्रता जहाँ भ्रातृ व भाईचारे की भावना की उत्कृष्ट व सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, वहीं सद्भावना के सिद्धांत को मज़बूती भी प्रदान करने वाली है। गुरु जी केवल शब्दों, वचनों द्वारा ही ऊँच-नीच, भेदभाव, जात-पाँत का विरोध नहीं करते थे, बल्कि अपने कार्यों एवं व्यवहार द्वारा भी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध लोगों को उपदेश व संदेश देते थे। भाई मरदाना जी को अपना सखा व साथी बनाना, अपना सत्संगी बनाना इस संदर्भ में प्रस्तुत उम्दा उदाहरण है। उनकी कार्यशैली अद्भुत व महान रही है।

भाई मरदाना जी उच्च कोटि के संगीतज्ञ तो थे ही, वे श्री गुरु नानक देव जी के सच्चे व प्रिय मित्र भी थे, सुख-दुख के साथी भी थे।

एक ग़लत अवधारणा उनके बारे में अज्ञानतावश बना ली गई। कुछेक साक्षी इतिहासकारों ने उन्हें भूखे-प्यासे एवं दुखी व्यक्ति के रूप में चित्रित व व्याख्यायित किया है। जो जगत-गुरु सब दुखियों के दुख दूर करने वाला हो, भूखों को भोजन खिलाने वाला हो, प्यासे प्राणियों की प्यास बुझाने वाला हो, सब में आध्यात्मिकता जगाने वाला हो, क्या उस महान गुरु की संगति में रहने वाला भूखा-प्यासा या दुखी रह सकता था! दरअसल भाई जी की प्रत्येक जिज्ञासा को गुरु जी वचनों द्वारा शांत करते रहते थे। यात्रा के दौरान जब बाबा नानक पातशाह जी का ध्यान अकाल पुरख के साथ जुड़ता, वे फरमान करते-- ''मरदानिआ! रबाब वजा! बाणी आई ए!'' भाई मरदाना जी गुरु जी का आदेश पाकर रबाब बजाने लगते। ब्रह्मांड झंकृत व पुल्लकित हो जाता, प्रकृति व सृष्टि धन्य हो उठती।

सिक्ख धर्म में 'भाई' की उपाधि अति सम्मानित व उच्च कोटि की मानी जाती है। यह उपाधि प्रदान करते समय रिश्तों, नातों, संबंधों, जातियों, पदवियों को महत्व नहीं दिया जाता। भाई मरदाना जी का श्री गुरु नानक देव जी के प्रति समर्पण, नम्रता की भावना और उच्च व्यक्तित्व के कारण ही वे 'भाई' की गौरवशाली उपाधि द्वारा विभूषित हैं।

भाई मरदाना जी को प्रथम सिक्ख, गुरु-घर का प्रथम कीर्तनकार होने का गौरव प्राप्त है। उन्हें श्री गुरु नानक देव जी की बाणी को १७ रागों में पिरोकर गाने का सम्मान हासिल हुआ। कीर्तन करने की परम्परा उनके परिवार में निरंतर जारी रही। उनके सुपुत्रों-- भाई रजादा, भाई सजादा ने भी बाणी का कीर्तन किया। श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय में गुरु-घर में कीर्तन करने की सेवा निभाने वाले भाई सत्ता जी व भाई बलवंड जी रबाबी भाई मरदाना जी के पौत्र (पोते) थे। उनके द्वारा रामकली राग में उच्चरित 'वार' श्री गुरु ग्रंथ

साहिब में अंकित है :

होवै सिफति खसंम दी
नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ।।
तुधु डिठे सचे पातिसाह
मलु जनम जनम दी कटीऐ।। *(पन्ना १६७)*

सिक्ख पंथ में रबाबियों को काफी सम्मान मिलता रहा है। भाई बाबक, भाई छबीला, भाई अबदुल्ला, भाई नत्थ मल्ल (नत्था), भाई सद्द-मद्द भाई नंद, भाई चंद, भाई अमीरा, भाई गिड्डू, भाई महबूब अली, भाई सितार नवाज़, भाई मलंग खान, भाई आगा फ़ैज, भाई इनायत, भाई संतू, भाई रूड़ा, भाई मोती, भाई सांई दित्ता, भाई ताबा और भाई लाल (बड़े) कीर्तन-कला व राग-संगीत के उच्च कोटि के कलाकार हुए हैं। अब पाकिस्तान में रहने वाले भाई लाल जी (दूसरे) तथा भाई शाद जी का प्रसिद्ध कीर्तनी जत्था भी भाई मरदाना जी के घराने से संबंधित है। इस जत्थे को सिक्ख संगत काफी सम्मान देती है।

मुंशी सुजान राय द्वारा लिखित 'खलासत-उत-तवारीख' में भाई मरदाना जी का विशेष वर्णन किया गया है। वह लिखता है-- ''गुरु नानक देव जी का विशेष साथी 'मरदाना' नाम का रबाबी था। कीर्तन ने जन्म तलवंडी में लिया। एक बार पूछने पर गुरु जी ने कहा, ''यह कीर्त (कीर्ति) शब्द है जि (जो) गुरु कहता है। मन में सुरति कर समझे, तिस की मुक्ति होय सांई कीर्तमुक्त है। यह कीर्त अर मुक्त एको है।''

गुरु जी ने प्रथम भेंट में भाई मरदाना जी से कह दिया था-- ''शबद पाइकै राग को गाए तां तू मरदाना कहलाए।''

एक दिन गुरु साहिब ने यूं ही मौज़ में आकर कहा, ''अगर तुम कहो तो मृत्यु के बाद तुम्हारी देह को ज़मीन में दफ़न कर ऊपर ईंटों का मकबरा बना दिया जाए?'' भाई मरदाना जी बोले, ''गुरु जी! मुझे 'मांस के मकबरे' में से निकालकर क्यों 'ईंटों के मकबरे' में कैद करना चाहते हैं?'' गुरु जी ने पुनः फरमान किया, ''भाई जी! आपने ब्रह्म को पहचान लिया है।''

उस समय मृतक प्राणी का दाह-संस्कार अलग-अलग ढंग से किया जाता था। इस सम्बंध में श्री गुरु नानक देव जी ने फ़रमान किया है :

इक दझहि इक दबीअहि इकना कुते खाहि।।
इकि पाणी विचि उसटीअहि
इकि भी फिरि हसणि पाहि।।
नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि।।

(पन्ना ६४८)

लंबे समय तक देश-विदेश में बाबा नानक जी का साथ निभाने वाले भाई मरदाना जी अफगानिस्तान के शहर खुरम (कुरम) में १२ नवंबर, सन् १५३४ ई. को प्रभु-चरणों में जा बिराजमान हुए। भाई मरदाना जी की देह का गुरु साहिब ने स्वयं अपने हाथों से दरिया कुरम के किनारे दाह-संस्कार किया था। वहां पर उनके वंशज आज भी उनकी स्मृति को संजोए बैठे हैं, उनकी अमूल्य विरासत को संभाले बैठे हैं।

होली से होला-महल्ला

- ज्ञानी सुरजीत सिंघ

होली भारत का एक मिथिहासिक एवं पौराणिक त्योहार है। इसका मूल सम्बंध हिंदू मत द्वारा प्रचलित वर्ण-विभाजन से है । होला-महल्ला का आरंभ श्री अनंदपुर साहिब में लोहगढ़ नामक स्थान पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने किया। इन दोनों त्योहारों की विचारधारा के पक्ष से आपस में भिन्नता है। गुरु-घर में गुरु की संगत के लिए जहां होली को इसके प्रचलित ढंग से खेलने में पूरी तरह से मनाही है, वहीं इसको नये तथा सुलझे रूप 'होला-महल्ला' के सिद्धांत के रूप में पेश किया गया है। पंथ के महान विद्वान भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार, युद्ध-विद्या के अभ्यास को नित्य नया रखने के लिए कलगीधर पातशाह की चलायी हुई रीति के अनुसार चेत वदी १ को सिक्खों में 'होला-महल्ला' होता है।

होला-महल्ला का होली की रस्म से कोई सम्बंध नहीं है। महल्ला एक प्रकार की मसनूई (बनावटी) लड़ाई है। पैदल, घुड़सवार तथा शस्त्रधारी सिंघ दो दिशाओं से एक-दूसरे पर हमला करते हैं । संगत इस बनावटी लड़ाई को देखती है। जो दल विजयी होता है, उसको सिरोपा बख़्शिश किया जाता है । खेद कि हम प्रत्येक वर्ष इस रस्म को औपचारिक-मात्र निभाते हैं, लाभ नहीं उठाते, जबकि शस्त्र-विद्या के बिना सिक्ख खालसा पंथ के नियमों के अनुसार अधूरा माना जाता है। इसी विषय पर भाई कान्ह सिंघ नाभा लिखते हैं -- ''खेद है कि अब सिक्खों ने शस्त्र-विद्या को अपनी कौमी-विद्या नहीं समझा, मात्र फौजियों का कर्त्तव्य मान लिया है, जबकि दशमेश जी का उपदेश है कि प्रत्येक सिक्ख पूर्ण सिपाही हो तथा शस्त्र-विद्या का अभ्यास करे।''

चाहे कितनी भी लड़ाकू कौम या जत्थेबंदी हो, हर वक्त या हर समय जंगों-युद्धों में नहीं रहती। सरकारी फौजें भी शस्त्रों का प्रयोग किसी शत्रु द्वारा उस पर किए हमले के समय ही करती हैं, हर समय नहीं, परंतु उनके शस्त्राभ्यास कभी बंद नहीं किए जाते। छठम पातशाह ने पंथ को बाकायदा शस्त्रधारी किया तथा हुकूमत के साथ चार जंगें लड़ीं। चारों में ही आप जी ने फ़तह हासिल की। गुरगद्दी सौंपने के समय आप जी ने श्री गुरु हरिराय साहिब को २२०० शस्त्रधारी घुड़सवार फौज की सुपुर्दगी की और साथ ही हुक्म किया कि

इस फौज को बाकायदा कायम रखना है। स्पष्ट है कि अगर फौज को कायम रखना है तो उनके अभ्यास बाकायदा चलते रहने चाहिए। दशम पातशाह ने कौम के बाकायदा जुझारू होने का एलान कर दिया तथा 'कृपाण' को पांच ककारों में शामिल करके सिक्खी पहनावे का सदैव के लिए अंग बना दिया । फिर यह नियम भी पक्का कर दिया कि सिक्ख शस्त्र-विद्या का अभ्यास करते रहें।

'होला' तथा 'महल्ला' क्रमशः अरबी व फारसी भाषा के शब्द हैं, जिनके अर्थ क्रमशः 'हमला' तथा 'हमले की जगह' हैं । यह भी ठीक है कि चाहे कृपाण को पातशाह ने ककारों की गिनती में सिक्खी पहनावे का पक्का अंग बना दिया फिर भी जंगों-युद्धों में जो भी उस समय के नये हथियार थे, उनके इस्तेमाल के लिए भी गुरु जी सबसे आगे रहे। हमें आधुनिक हथियारों का प्रयोग तथा अनुशासित पहनावे के रूप में कृपाण के आपसी सम्बंधों को समझना चाहिए।

कृपाण के लिए 'तलवार', 'तेग', 'खडग' आदि अनेक नाम पहले से ही प्रचलित थे। सोचने का विषय है कि पातशाह को यह नया नाम इस शस्त्र के लिए देने की क्या ज़रूरत पड़ी? इस सम्बंध में यह याद रहे कि कृपाण धारण करने वाले को हर पक्ष से हर वक्त चेतावनी मिलती है कि उसने शस्त्रधारी होना है तो किसके लिए? कृपाण का नया शब्द पातशाह ने दो शब्दों-- 'कृपा+आन' की संधि से बख़्शा है अर्थात् गुरु के सिक्ख ने जब कृपाण पर हाथ रखना है तो उसके सामने दो बातों में से एक कारण अवश्य होना चाहिए या तो 'कृपा' अर्थात् 'मज़लूम की रक्षा' अथवा 'दुष्ट की सुधाई' के लिए या फिर अपने पंथ, धर्म की आन व शान के लिए।

होला-महल्ला का महत्त्व और भी स्पष्ट हो जाता है, जब हम सिक्खी के मूल सिद्धांत 'देग-तेग फ़तह' शब्दों के बारे में सोचते हैं। जहां कड़ाह प्रसादि को देग कहा है वहीं साथ ही नियम है कि बिना कृपाण-भेंट के कड़ाह प्रसादि की देग नहीं बांटनी चाहिए और न ही छकनी चाहिए। क्षमा चाहता हूं कि कुछ सज्जन कड़ाह प्रसादि की देग को कृपाण भेंट करने को 'भोग लगाना' समझ लेते हैं। गुरु-घर में भोग लगाने का कोई विधान है ही नहीं। भोग लगाने की प्रथा देवी-देवताओं अर्थात् मूर्ति के पुजारियों की है। गुरु-घर में तो सिक्ख धर्म के मूल सिद्धांत 'देग-तेग फ़तह' के आधार पर कृपाण भेंट करने का नियम है, ताकि गुरसिक्ख तेग (शस्त्र) को भूलकर देग (कड़ाह प्रसादि) के लिए ही न रह जाए। जहां हम देग छकने को प्रसाद छकना मानकर गुरु की आज्ञा का पालन करते हैं वहीं हमें तेग अर्थात् शस्त्र धारण करने वाले गुरु-आदेश को

भी याद में लाकर शस्त्रधारी बनना चाहिए अर्थात् अमृत छककर तेग-कृपाण सहित पांच ककारों को धारण करना चाहिए। 'गुरबिलास पातशाही दसवीं' के अध्याय २३ में सिक्खों के लिए इस सम्बंधी दशम पातशाह द्वारा दिया हुक्म इस प्रकार है :

पुनं संग सारे प्रभ जी सुनाई।
बिना तेग तीरं रहो नाह भाई।
बिना ससत्र केस नरं भेड जानो।
गहे कान ताको कितै लै सिधानो ।।९८।।
इहै मोर आगिआ सुनो हे पिआरे ।
बिना तेग केसं दिवो न दिदारे।
इहै मोर बैना मंने सु जोई।
तिसे इछ पूरं सभै जान सोई ।।९९।।

'रहितनामा' भाई देसा सिंघ में हुक्म है :

शसत्रहीन इह कबहू नहि कोई।
रहितवंत खालसा सोई।
कछ क्रिपान न कबहूं तिआगै।
सनमुख लरै न रण ते भागै ।।१५।।

'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की रुत ३, अध्याय २३ के अनुसार दशमेश जी का खालसे को हुक्म है :

. . . शसत्रनि के अधीन है राज।
जो न धरहि तिस बिगरहि काज ।।६।।
यां ते सरब खालसा सुनीअहि।
आयुध धरिबे उत्तम गुनीअहि।
जबि हमरे दरशन को आवहु।
बनि सुचेत तन शसत्र सजावहु ।।७।।
कमर कसा करि देहु दिखाई।
हमरी खुशी होइ अधिकाई।

यह सब बताने का मतलब यह साबित करना है कि समकालीन लेखक तथा सभी सिक्ख इतिहासकार इस बारे में एक मत हैं कि सिक्खों के लिए केशाधारी तथा शस्त्रधारी होना सबसे ज़रूरी है। शस्त्र-अभ्यास को पक्का करने के लिए दशम पातशाह ने होला-महल्ला का त्योहार खुद आरंभ किया। जहां गुरसिक्ख की कड़ाह प्रसादि को कृपाण भेंट करने, देग के साथ सांझ रखने के साथ-साथ शस्त्रों के साथ सांझ बनाए रखना ज़रूरी है, वहीं हर वर्ष आने वाला होला-महल्ला उसको शस्त्र-अभ्यासी बने रहने की भी याद दिलाता है । शस्त्रधारी फौज का भी यही नियम होता है। युद्धों के समय यह शस्त्र-अभ्यास रूपी तैयारी ही उनके युद्ध का असल आधार होती है। होला-महल्ला का भी यही मतलब है ।

मात्र शस्त्रधारी होना भी किसी वक्त मनुष्य को ज़ालिम बना सकता है, परंतु जब उसे जीवन की घुट्टी गुरबाणी से मिली हो, सारे शस्त्रों की पहचान उसको कृपाण से मिलना आरंभ हो, जिसका मतलब ही उसके लिए मज़लूम की रक्षा करना तथा गर्व से जीना है तो ज़ालिम होने की संभावना ही खत्म हो जाती है। फिर उसको इसके बारे में दशम पातशाह

की बाकायदा हिदायत भी है :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ।।
हलाल असत बुरदन ब शमशीर दसत ।। २२ ।।
(ज़फरनामा)

अर्थात् हथियार का प्रयोग तभी जायज़ है जब अन्य सभी प्रयास असफल हो जाएं।

आज हालात ये हैं कि सिक्ख पंथ का बड़ा हिस्सा अमृत छकने से वंचित है। अमृत छक कर ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु धारण किया जा सकता है। बिना गुरु (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) धारण किए तो सिक्ख नहीं बना जा सकता। ऐसे लोग अमृत से वंचित होकर पांच ककार धारण करने से भी दूर होते गए।

यदि पहले हम अमृतधारी, फिर शस्त्रधारी होने से कुताही कर गए तो हमें होला-महल्ला की समझ नहीं आ सकती। जहां सिक्ख है वहीं होला-महल्ला का त्योहार भी ज़रूरी है। चाहे पातशाह ने इसको श्री अनंदपुर साहिब के लोहगढ़ साहिब से ही आरंभ किया है, मगर इसका महत्त्व समझना हम सबके लिए अति आवश्यक है।

होली : होली एक मिथिहासिक एवं पौराणिक त्यौहार है। हिंदू मत में किए गए वर्ण-विभाजन के अनुसार ब्राह्मण वर्ग ने अपने लिए वैशाखी का त्योहार निश्चित कर वैश्यों के लिए दीवाली, क्षत्रियों के लिए दशहरा तथा शूद्रों के लिए होली का त्योहार प्रचलित किया, जबकि मूल रूप से यह ब्राह्मणी त्योहार है।

पौराणिक कथा के अनुसार अहंकारी राजा हिरण्यकशिपु को अभिमान था कि काल उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ऐसे में वो ज़ालिम बन गया। उसने एलान किया कि कोई परमात्मा का नाम न जपे, सभी उसका यश-गान करें । परमात्मा का करिश्मा हुआ, उसके घर में से ही उसका पुत्र भक्त प्रहलाद उसकी इस बात का विरोधी हो गया तथा वह हरि-नाम जपने एवं जपाने लगा। राजा ने उसको हर ढंग से खत्म करने का प्रत्यन किया परंतु परमात्मा ने उसकी हर बार रक्षा की। अंततः हिरण्यकशिपु के कहने पर उसकी बहन होलिका अपने भतीजे को गोद में लेकर चिता पर बैठ गई। होलिका जलकर राख हो गयी और भक्त प्रहलाद बच गया। आखिर समय आ गया कि हिरण्यकशिपु को काल ने अपनी आगोश में ले लिया और भक्त प्रहलाद की जय-जयकार हुई। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इस सम्बंध में ज़िक्र श्री गुरु अमरदास जी की बाणी (पन्ना ११३३) तथा भक्त नामदेव जी की बाणी (पन्ना ११६५) में आता है। इससे यह समझना चाहिए कि मनुष्य चाहे कितना भी ज़ालिम या अहंकारी हो जाए, प्रभु अपने भक्तों की सदा लाज रखता है ।

होली के त्योहार के लिए इस घटना को

आधार बनाकर रात को होली जलाई जाती है तथा राख को होलिका की राख मानकर सुबह उसको उड़ाया जाता है। होली को मनाने के ढंग में और भी बिगाड़ तब से आया जब से लोग एक-दूसरे पर कीचड़, गोबर एवं गंदगी फेंककर इस त्योहार को गलत ढंग से मना रहे हैं। शराब का दौर चलता है। अन्य कई प्रकार के नशों का सेवन एवं वितरण होता है। परिणामस्वरूप लड़ाई-झगड़े होते हैं, कत्ल तक हो जाते हैं। महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार किया जाता है।

सिक्ख धर्म में होली का त्योहार ऐसे ढंग से मनाना पूरी तरह से विवर्जित है। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रदत्त सुंदर केशधारी स्वरूप का अपमान करने या करवाने की हमें कोई अनुमति नहीं। होली मनाने के इस ढंग से गुरमति बिलकुल सहमत नहीं है।

पंचम पातशाह ने होली के बहाने अपना मुंह-सिर रंगने वाले लोगों को उपदेश दिया है :

गुरु सेवउ करि नमसकार ।।
आजु हमारै मंगलचार ।।
आजु हमारै महा अनंद ।।
चिंत लथी भेटे गोबिंद ।।१।।
आजु हमारै ग्रिहि बसंत ।।
गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ।।१।। रहाउ ।।
आजु हमारै बने फाग ।।
प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ।।
होली कीनी संत सेव ।।
रंगु लागा अति लाल देव ।।२।।

(पन्ना ११८०)

अर्थात् जब जीव प्रभु-प्यार में रंग जाता है तो मानों उसके घर सदा ही आनंद व बसंत ऋतु बनी रहती है। दुनिया के लोगो ! अगर आपने होली का आनंद मानना है तो प्रभु-भक्तों की संगत में आओ, तब नाम की मस्ती वाला 'पक्का लाल रंग' आपके मन पर चढ़ेगा। यही हमारे लिए उत्तम होली होनी चाहिए।

गुरु साहिबान ने होली के अर्थ को सही मायने में प्रस्तुत कर सही ढंग से मनाने की सीख दी। उन्होंने मानव को सभ्य से असभ्य बनाने वाली रीति को त्यागकर सभ्य बने रहने वाली रीति दृढ़ करवाई और रंगों के इस त्योहार को प्रभु-रंग का स्पर्श प्रदान किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस त्योहार को 'होला-महल्ला' नाम प्रदान कर इसे पूर्ण रूप से आध्यात्मिक रंग से ओत-प्रोत कर दिया।

भाई बिधी चंद छीना : गुरु का सीना

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

सच्चे गुरु की प्रेरणा और सत्संगति किस प्रकार बुरी संगत वाले को साधु और सज्जन बना देती है, भाई बिधी चंद का जीवन इसकी अनुपम मिसाल है। यह पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी और छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की कृपा ही थी कि उन्होंने चोर के रूप में कुख्यात होते चले जा रहे 'बिधिया' को एक समर्पित सिक्ख योद्धा 'भाई बिधी चंद' बना दिया।

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन : भाई बिधी चंद के जन्म और जन्म-स्थान को लेकर कुछ मतभेद अवश्य हैं परंतु अधिकांश इतिहासकार यही मानते हैं कि भाई बिधी चंद जिला तरनतारन साहिब के गांव छीना के निवासी थे, और इनका जन्म भी इसी गांव में ही हुआ था। पिता भाई देवा जी तथा माता संभली जी के घर १३ वैशाख, संवत् १६३६ तद्नुसार ८ अप्रैल, १५६० ई. को भाई बिधी चंद छीना ने जन्म लिया।

यह भी अनुमान लगाया जाता है कि भाई जी के पिता गाँव छीना से उठकर गाँव सुरसिंह, जिला तरनतारन आ गये थे।

भाई बिधी चंद के बचपन का नाम 'बिधिया' था। बालक बिधिया कुसंगत में पड़कर चोरी, लूट-खसोट करने लगा। युवा होते-होते बिधिया इलाके में डाके मारने वाले के रूप में कुख्यात हो चला।

भाई अदली से भेंट : एक बार की घटना है, बिधिया गांव आल्हीआं से भैंसें चुराकर गांव धुन्ना से होते हुए चोहला साहिब आ रहा था तो उसे पता चला कि मेरे पीछे गांव अली से खुरा नप्पड़ी यानी खुरा खोजने वाले चले आ रहे हैं। उन्होंने भैंसों को पानी के तालाब में बैठाया और झट से भाई अदली जी के पास आकर बैठ गये और अपने बारे में सच-सच बता दिया। भाई अदली जी ने सुनकर उन्हें सांत्वना दी तथा गुरसिक्खी धारण कर अच्छे कर्म करने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा :

सिमरहु श्री अरजन गुरू राखहि तुव लाजा।
बहुर बनहु सिख जाइ करि तजि के अस काजा।
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रास ८, अध्याय १)

भाई अदली से प्रभावित होकर बिधिया उनके साथ श्री गुरु अरजन देव जी के दरबार

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१*

में हाज़िर हुआ और भोलेपन से बोला कि उसे अपना सिक्ख बना लें, भले वे उससे जैसी चाहे चोरी करवा लें। बिधिया की बात सुनकर श्री गुरु अरजन देव जी मुस्करा पड़े। बिधिया को सिक्ख बनाया और चोरी-चकारी छोड़ कर श्रेष्ठ जीवन जीने का उपदेश दिया।

गुरु-घर के निकटवर्ती और अनन्य सेवक : भाई बिधी चंद गुरु-घर के अत्यंत निकटवर्ती सिक्ख और अनन्य सेवक रहे हैं। वे गुरु-घर के हर महत्वपूर्ण काल और आयोजन में सदैव उपस्थित रहे। पंचम पातशाह की शहादत के समय भाई साहिब अन्य चार सिक्खों सहित गुरु जी के साथ ही थे और पंचम पातशाह की आंखों देखी शहीदी-गाथा सुनाने वालों में से एक। यही नहीं, पंचम पातशाह की सुपत्नी माता गंगा जी के अंतिम संस्कार के समय भी सेवा करने वालों में सबसे आगे थे। इसके अलावा छठम पातशाह के गुरुआई पर आसीन होते समय, गुरु जी के अनंद कारज और भाई गुरदित्ता जी के अनंद कारज के समय में भी आप सेवा करने वालों में शामिल थे।

सिक्खों का सशस्त्रीकरण : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब पिता श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी के पश्चात् गुरिआई पर आसीन हुआ और जालिमों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए सिक्खों की सैनिक-शक्ति बनाने के प्रयास आरंभ कर दिये। सिक्खों को युद्ध-अभ्यास करवाना शुरू कर दिया गया। जल्दी ही समर्पित सिक्खों की एक अच्छी-खासी सेना बन गई । भाई बिधी चंद गुरु जी के इन कार्यों में पेश-पेश रहे और शीघ्र ही उन्हें सेना के एक जत्थे का जत्थेदार बना दिया गया।

जत्थेदार के रूप में भाई साहिब : लम्बे-ऊँचे कद के शक्तिशाली भाई बिधी चंद अपने जत्थे के योद्धाओं के सचमुच नायक थे । आपने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के द्वारा लड़े गये सारे युद्धों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। ग्वालियर के किले से मुक्त होकर आये गुरु साहिब के मुख्य अंगरक्षक की जिम्मेदारी भाई बिधी चंद ने संभाली थी। बीबी कौलां जी को शरण देने और शाही बाज़ को पकड़ लेने से नाराज़ होकर लाहौर की मुगल फौज ने गुरु जी पर आक्रमण कर दिया। श्री अमृतसर के निकट सन् १६२८ में मुखलिस खान के ७००० सिपाहियों और सिक्खों में घमासान जंग हुई। सिक्खों की विजय हुई। भाई बिधी चंद ने सुल्तान बेग जैसे सिपहसालार का वध किया। गुरु जी के द्वारा लड़े गये तीनों शेष युद्धों में भी भाई बिधी चंद ने अपने युद्ध-कौशल का लोहा मनवाया। श्री हरिगोबिंदपुर (१६३०), महिराज (१६३१) और करतारपुर (१६३४) में लड़ी गई इन तीनों जंगों में भी सिक्खों की विजय हुई।

लाहौर से घोड़े वापस लाना : भाई बिधी चंद

के कारनामों में लाहौर के शाही महल से घोड़े लाने का कारनामा सबसे अधिक प्रसिद्ध है। हुआ यूँ कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब लुधियाना ज़िले के गुरुसर सधार (सिधार) में ठहरे हुए थे। (यह वही स्थान है जहाँ मुझ अकिंचन का कॉलेज स्थित है।) काबुल से भाई दिआल चंद और बखतमल, दो सिक्ख गुरु जी से आकर मिले। सिक्खों ने बताया कि काबुल से भाई करोड़ी मल्ल दो सुंदर घोड़े-- गुलबाग और दिलबाग आपको भेंट करने के लिए ला रहा था, लेकिन लाहौर के हाकिम इनायत उल्ला खान ने वे घोड़े छीन लिये। गुरु जी ने कहा, ''आप चिंता न करें! भाई बिधी चंद वे घोड़े अपने आप हमारे पास ले आयेगा।''

भाई बिधी चंद घोड़े छुड़ाने लाहौर जा पहुँचे। भाई जी ने घसियारे का भेस बनाया और रोज़ मखमली घास का एक गट्ठर लेकर शाही अस्तबल में पहुँच जाते। घास खरीदते-खरीदते अस्तबल के दारोगा को आपका व्यवहार इतना अच्छा लगा कि उसने आपको घोड़ों की देखभाल के लिए नौकर रख लिया। भाई जी भोलेपन का स्वांग करते-करते नौकरी करने लगे। दिन भर काम करते और रोज़ रात को किले की ऊँची दीवार से पास बहती रावी नदी में एक बड़ा पत्थर फेंक देते। आवाज़ सुनकर पहले तो पहरेदार कुछ दिन चौकन्ने हुए, मगर फिर रोज़ रात को आवाज़ सुनने के अभ्यस्त हो गये। भाई बिधी चंद ने मौक़ा मिलते ही एक दिन एक घोड़ा खोला और उस पर सवार होकर किले की दीवार से रावी में छलांग लगा दी। पानी में कुछ गिरने की आवाज़ के आदी हुए पहरेदार लापरवाह रहे और भाई बिधी चंद घोड़ा लेकर गुरुसर सधार गुरु जी के पास आ पहुँचे। किसी को कानों कान ख़बर तक न हुई। दूसरा घोड़ा भाई बिधी चंद नजूमी (ज्योतिषी) का भेस धर कर ले आये सभी को मूर्ख बनाते हुए।

महिराज की (तीसरी) जंग (१६३१ ई.) इन्हीं घोड़ों के प्रसंग के कारण ही हुई थी। भाई बिधी चंद के शौर्य से प्रसन्न होकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने भाई जी को गले से लगाया और कहा-- ''बिधी चंद छीना : गुरु का सीना!

प्रचारक के रूप में : सन् १६३५ ई० में अयोध्या की संगत के आग्रह पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने भाई बिधी चंद को सिखी-प्रचार के लिए अयोध्या भेज दिया। भाई जी ने साबित किया कि वे केवल महान् योद्धा ही नहीं बल्कि उच्च कोटि के विचारक और उपदेशक भी हैं। प्रचार-कार्य करते हुए अगस्त, १६३८ ई० में भाई बिधी चंद अकाल चलाणा कर गये।

दिल्ली फतह के सिक्ख महानायक : सरदार बघेल सिंघ

*-डॉ.सत्येंद्र पाल सिंघ**

सीमित सैन्य-शक्ति, किन्तु असीम ऊर्जा और अविचल संकल्प से भारत की मुगल सल्तनत को परास्त कर दिल्ली पर काबिज होने में सफल हो जाने वाले सिक्ख जरनैल सरदार बघेल सिंघ सिक्ख इतिहास के ऐसे महानायक हैं जिनकी किसी अन्य के साथ तुलना करना संभव नहीं है। उनका शौर्य और पराक्रम व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के स्थान पर गुरु साहिबान और सिक्ख पंथ के गौरव को समर्पित था। इस भावना ने उनकी वीरता को विनम्रता से आभूषित कर सैन्य-बल को नये अर्थ प्रदान किये थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सन् १७०८ में ज्योति-जोत समाने के पश्चात् उनके निर्देश और आशीर्वाद से बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पंजाब में पहला सिक्ख राज्य स्थापित किया। उनका राज्य सिक्ख इतिहास के एक स्वर्णिम पृष्ठ के रूप में याद किया जाता है। सन् १७१६ में सिक्ख राज्य के पतन और दिल्ली में बाबा बंदा सिंघ जी की लोमहर्षक शहीदी के बाद सिक्ख दस वर्ष तक पुनरुत्थान में लगे रहे। सन् १७२६ मे मुगल सेना से जूझते हुए भाई तारा सिंघ की हुई शहीदी की सिक्खों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई और भारी रोष उत्पन्न हो गया। मुगल शासक सिक्खों के इतिहास और मनोबल से अवगत थे। सिक्खों को शांत रखने के रणनीतिक उद्देश्य से लाहौर के सूबेदार और दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह ने एक लाख रुपये वार्षिक आय की जागीर और नवाब के खिताब का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। सिक्खों ने गहन सोच-विचार के बाद प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और एक सिक्ख सेवक सरदार कपूर सिंघ को नवाब का खिताब लेने को अधिकृत किया। वे नवाब कपूर सिंघ के नाम से प्रसिद्ध हुए और पंथ के जत्थेदार बने। पंथक-प्रबंधन के लिये सिक्खों के विभिन्न समूहों को संयोजित कर दो मुख्य दल बनाये गये-- बुड्ढा दल और तरुणा दल। जैसा कि नाम से स्पष्ट है बुड्ढा दल में वरिष्ठ सिक्ख और तरुणा दल में युवा सिक्ख शामिल किये गये। इनमें सम्मिलित जत्थों की संख्या ६६ तक थी। २९ मार्च, सन् १७४८ को वैशाखी के दिन श्री अमृतसर साहिब में एक बड़ी सभा हुई, जिसमें नवाब कपूर सिंघ ने प्रस्ताव पेश किया कि सिक्खों का एक मजबूत संगठन बनाया जाये। इस प्रस्ताव को स्वीकार कर एक नये संगठन का गठन किया गया, जिसका नाम 'दल खालसा' रखा गया। 'दल खालसा' का जत्थेदार

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को बनाया गया। इसके अधीन निम्नलिखित ग्यारह मिसलें बनाई गईं :--

१. मिसल आहलूवालिया
२. मिसल सिंघपुरियां
३. मिसल शुकरचक्किया
४. मिसल निशानांवाली
५. मिसल भंगिआं
६. मिसल घन्हईया
७. मिसल नकईयां
८. मिसल डल्लेवाली
९. मिसल शहीदां
१०. मिसल करोड़ासिंघिया
११. मिसल सांघड़ीयां अथवा रामगढ़िया

बारहवीं मिसल 'फूलकियाँ' थी, जिसे उपरोक्त मिसलों से भिन्न माना जाता था।

इन मिसलों की घोषणा भी वैसाखी के ही दिन श्री अमृतसर साहिब में की गई थी। इन मिसलों अथवा समूहों के गठन के बाद सभी सैनिकों और उनके मुखियाओं को स्वतन्त्रता दी गई कि वे जिस भी जत्थे में चाहें, शामिल हो सकते हैं। यह भी निर्णय किया गया कि सभी मिसलें अपने आंतरिक प्रबंधन के लिये पूरी तरह से स्वतंत्र होंगी किन्तु सिक्ख पंथ के समान मुद्दों पर उन्हें दल खालसा का फैसला और नीति को मानना होगा। इस तरह दल खालसा को बड़ी ही सूझबूझ से एक फेडरल संगठन का रूप दिया गया, जो बहुत ही प्रगतिगामी कदम था और सिक्ख रणनीति की उत्तमता को प्रकट करने वाला था। उस समय के प्रसिद्ध सिक्ख सेनापति इन मिसलों के जत्थेदार बने।

सरदार बघेल सिंघ सन् १७६१ में करोड़ासिंघिया मिसल के जत्थेदार बने थे। वे सरदार शाम सिंघ, सरदार करम सिंघ और सरदार करोड़ा सिंघ के बाद इस मिसल के जत्थेदार बने थे। सरदार शाम सिंघ गांव नारली के रहने वाले थे और नादिर शाह की फौज से लड़ते हुए शहीद हो गये थे। सरदार करम सिंघ भी एक युद्ध में शहीद हुए थे। पैजगढ़, गुरदासपुर के निवासी सरदार करोड़ा सिंघ नि:संतान थे। वे बहुत वीर योद्धा थे। उड़मुड़ के युद्ध में उन्होंने दीवान विश्वंभर दास का सिर ऐसे काट दिया था जैसे तरबूज काटा जाता है। एक युद्ध में उनकी शहीदी के पश्चात अपनी योग्यता के आधार पर करोड़ासिंघिया मिसल के जत्थेदार का पद सरदार बघेल सिंघ को प्राप्त हुआ था। सरदार बघेल सिंघ ने कमान संभालने के बाद अपनी मिसल की शक्ति में तेजी से वृद्धि की। करोड़ासिंघिया मिसल के सिपाहियों की संख्या तीस हजार तक पहुंच गई। अपनी हिम्मत और वीरता के बल पर सरदार बघेल सिंघ ने एक बड़े इलाके में अपना दबदबा स्थापित कर लिया, जिसमें जलंधर से लेकर पीलीभीत और अंबाला से लेकर अलीगढ़ तक का क्षेत्र शामिल था। इस क्षेत्र के

मुगल शासकों को उन्होंने युद्धों में करारी शिकस्त दी थी।

सरदार बघेल सिंघ पंथ के हितों के लिये सदा सक्रिय रहते थे। ज्ञानी सोहन सिंघ सीतल के अनुसार सन् १७६५ में जब बुड्ढा दल ने नजीबुद्दौला के विरुद्ध राजा जवाहर मल्ल की मदद की तो सरदार बघेल सिंघ भी खालसा फौज में शामिल थे। अब्दाली के आठवें हमले में सरदार बघेल सिंघ ने विशेष पराक्रम दिखाया था। बटाला के युद्ध में उन्होंने अब्दाली को भारी क्षति पहुंचाई थी। मई, सन् १७६७ में सिक्खों ने यमुना पार नजीबुद्दौला पर पुनः हमला किया। उस समय अब्दाली पंजाब में ही था। उसने अपनी फौज को नजीबुद्दौला की सहायता के लिये भेजा। यहां भीषण युद्ध हुआ। इसमें सरदार बघेल सिंघ वीरता से लड़ते हुए घायल हो गये।

अब्दाली के नौवें हमले के समय भी सिक्खों ने उसका रास्ता रोका था। जब वह हिंदुस्तान से धन-दौलत लूट कर और साथ में २२०० हिन्दू स्त्रियों को कैद कर काबुल लौट रहा था, तो सिक्खों ने झेलम नदी के तट पर उस पर आक्रमण किया। सरदार जस्सा सिंघ, सरदार चढ़त सिंघ और सरदार बघेल सिंघ के संयुक्त नेतृत्व में सिक्खों ने लूट का माल छीन लिया और सभी हिन्दू स्त्रियों को मुक्त करा कर, अपने खर्चे पर सम्मान सहित उनके घर पहुंचाया था। सिक्खों की इस वीरता ने अब्दाली और उसकी फौज के दिल में सिक्खों का खौफ भर दिया था। सिक्ख अब अधिक उत्साह से यमुना पार के क्षेत्र को नियंत्रण में लेने के लिये सैन्य-शक्ति का प्रयोग करने लगे थे। यहां का शासक नजीबुद्दौला सिक्खों से अनेक युद्धों में पराजित हो चुका था। अंततः उसने सन् १७६८ में अपने इलाके के कई क्षेत्रों की आय सिक्खों के नाम कर दी। इसे मिसलों ने आपस में विभक्त कर लिया था। सन् १७७३ में एक ब्राह्मण की सहायता के लिये जब सरदार करम सिंघ शहीद ने यमुना पार के क्षेत्र पर हमला किया तो सरदार बघेल सिंघ भी उनके साथ थे। उस समय वे दिल्ली के शाहदरा तक जा पहुंचे थे। उन्होंने ब्राह्मण की बेटी को जलालाबाद के सूबेदार हसन खान की कैद से मुक्त करा कर उसका सम्मान सहित विवाह सम्पन्न कराया था और हजारों रुपये दान में दिये थे। इस हमले में हसन खान मारा गया था। सिक्ख लगातार यमुना पार के इस क्षेत्र में, जिसमें वर्तमान उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी के क्षेत्र शामिल थे, अपनी स्थिति और दखल मजबूत करते रहे। जून, सन् १७८१ में बादशाह ने गंगा-यमुना के मध्य के क्षेत्र पर सिक्खों का अधिकार मानते हुए सरकारी आय का आठवां भाग देना मान लिया। इसमें मुख्य भूमिका सरदार बघेल सिंघ की थी।

मुगलों की नीयत साफ न देखकर जनवरी, सन् १७८३ में सरदार बघेल सिंघ ने इस क्षेत्र पर पुनः आक्रमण करने का निर्णय किया। उनके

नेतृत्व में सिक्खों ने आगे बढ़ते हुए अनूपशहर और अलीगढ़ तक का क्षेत्र विजय कर लिया। यहां से विजय-पताका फहराते हुए सिक्ख फौज मलकागंज, सब्जीमंडी और मुगलपुरा तक पहुंच गई।

वास्तव में उपद्रवियों की आक्रांति को देखते हुए चुप होकर बैठना सरदार बघेल सिंघ की नियति नहीं थी। किसी न किसी फौजी कार्यवाही में वे भाग लेते ही रहते थे। भाई रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार, सिक्खों को उनके नेतृत्व में विश्वास भी था :

खालसे सोऊ मंन लई,
कही जु सिंघ बघेल।
हम लरनो मरनो किम सँगै,
यह है हमरी नित खेल।

एक सच्चे योद्धा और कुशल सेनापति की तरह युद्ध करना सरदार बघेल सिंघ का सबसे प्रिय शगल था, जिसमें उनका मन रमता था। विश्राम करना उन्होंने सीखा ही नहीं था। उनका शौर्य-प्रदर्शन धर्म और पंथ के हित के लिये था। उन्हें परहित की भी चिंता थी, तभी तो अब्दाली जैसे शक्तिशाली हमलावरों से टकराने में भी उन्हें कोई संकोच नहीं था। सिक्ख पंथ की शान के लिए उन्होंने मराठों को भी धूल चटा दी थी। सरदार बघेल सिंघ ने सन् १७८३ में अन्य मिसलों के सहयोग से दिल्ली पर एक बड़ा आक्रमण किया था। इस आक्रमण में उनके साथ चालीस हजार की फौज थी। मजनू का टीला होते हुए सिक्ख फौज लाल किले तक जा पहुंची और कब्जा कर लिया। दिल्ली के लोग सिक्खों की शक्ति देख कर भय से काँप उठे थे। उस समय दिल्ली के तख्त पर बादशाह शाह आलम का अधिकार था। उसका साहस नहीं हुआ कि सिक्खों का सामना कर सके। बादशाह ने अपने वजीर के माध्यम से समझौते का प्रस्ताव भेजा। सिक्खों और दिल्ली के तख्त के मध्य निम्न शर्तों पर समझौता हुआ :-

१. मुगल शासन सिक्खों को तीन लाख रुपये मुआवजा देगा।

२. नगर की कोतवाली से चुंगी वसूलने का अधिकार सिक्खों को होगा।

३. जब तक गुरुद्वारों की सेवा का कार्य पूर्ण नहीं होता, सरदार बघेल सिंघ चार हजार घुड़सवार सैनिकों के साथ दिल्ली में ही रहेंगे।

इससे सरदार बघेल सिंघ एक ताकतवर नायक के रूप में उभर कर सामने आये। कहते हैं कि जब दिल्ली के गुरुद्वारों का सेवा-कार्य पूर्ण होने के पश्चात सरदार बघेल सिंघ पंजाब वापिस जाने लगे तो बादशाह शाह आलम ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। सरदार बघेल सिंघ पूरे शस्त्र सजा कर और हाथी पर सवार होकर बादशाह से मिलने गये। उन्होंने दरबार में पहुँचते ही बिना शीश झुकाये, बुलंद आवाज में 'फतहि' बुलाई। बादशाह शाह आलम ने अपने सभी दरबारियों को भी 'फतहि' बुलाने का आदेश दिया। बादशाह ने सरदार बघेल सिंघ का

सम्मान करते हुए एक हाथी, सोने की एक जंजीर, पांच घोड़े और अन्य बहुत-से उपहार देकर विदा किया। दिल्ली स्थित निम्न गुरुद्वारे सरदार बघेल सिंघ की वीरता और संकल्प से ही चिन्हित होकर आकार ले सके थे :--

गुरुद्वारा माता सुंदरी जी
गुरुद्वारा बंगला साहिब
गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब
गुरुद्वारा सीसगंज साहिब
गुरुद्वारा मजनूं का टीला (टिल्ला)
गुरुद्वारा बाला साहिब
गुरुद्वारा मोतीबाग

सरदार बघेल सिंघ ने अपनी निगरानी में उपरोक्त स्थान चिन्हित किये थे और गुरुद्वारों का निर्माण-कार्य पूर्ण कराया था। इस कार्य में सात महीने का समय लग गया था। इस समयावधि में दिल्ली के लोग उनसे इतने प्रभावित हुए थे कि उन्हें अपने सुयोग्य शासक के रूप में देखने लगे थे, किन्तु सरदार बघेल सिंघ ने समझौते का पालन किया था, अत: निर्माण-कार्य पूरा होते ही पंजाब वापिस लौट गये थे। उनके लिये व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा का कोई महत्व नहीं था।

श्री अमृतसर साहिब के गांव झबाल के सिक्ख परिवार में सन् १७३० में जन्म लेने वाले सरदार बघेल सिंघ एक समृद्ध पारिवारिक विरासत के उत्तराधिकारी थे। उनके पूर्वजों ने श्री गुरु अरजन साहिब के काल में सिक्ख पंथ अपनाया था, जिनमें चौधरी भाई लंगाह का विशेष आदर-सम्मान था। माई भागो जी भी इस परिवार से संबंध रखती थीं। सरदार बघेल सिंघ ने अपनी शानदार विरासत को आगे बढ़ाया और योग्य उत्तराधिकारी साबित हुए। वे एक वीर योद्धा के साथ ही कुशल रणनीतिकार और दूरदृष्टा भी थे। एक विद्वान के अनुसार यदि उन्हें सभी सिक्ख मिसलों का पूर्ण सहयोग मिला होता तो पूरे हिंदुस्तान पर सिक्खों का राज स्थापित हो सकता था। एक समय ऐसा आया था जब सभी प्रमुख शक्तियां-- मुगल, मराठे कमजोर हो चुके थे और अंग्रेज़ अभी दूर थे। सरदार बघेल सिंघ जीवन भर पंथ-हित के लिये सभी को साथ लेकर चलने और एकसूत्र में पिरोने का प्रयास करते रहे।

सरदार बघेल सिंघ का व्यक्तित्व ऐसा था कि सत्ता के सभी दावेदार, सभी पक्ष, वे मुगल हों या मराठे, उनसे मित्रतापूर्ण संबंध रखने के इच्छुक रहते थे। उनका देहांत सन् १८०९ में हुआ था। जीवन भर वे किसी न किसी संघर्ष में शामिल रहे। उनका जीवन ही सिक्खी-सिद्धांतों की स्थापना और रक्षा के लिये था। आज जब उपलब्धियां हासिल करने का ढंग और स्वरूप बदल चुका है, सफलता के लिये जिस भावना, ऊर्जा और संकल्प की आवश्यकता होती है, वह सरदार बघेल सिंघ से सीखा जा सकता है।

अकाली आचार-व्यवहार के अभ्यासी किरदार के मालिक जत्थेदार अकाली फूला सिंघ

*-डॉ. चमकौर सिंघ**

'अकाली' का सम्बन्ध 'अकाल' के साथ है। 'अकाल' के कोशगत अर्थ हैं-- काल-रहित, मृत्यु-रहित, नाश-रहित, समय से मुक्त। गुरमति दर्शन में 'अकाल' शबद परम सत्य, परमात्मा, करता पुरख, वाहिगुरु का सूचक है। इस प्रकार धर्म शास्त्रीय अर्थों में 'अकाली' वो शख्सियत है जो काल या मृत्यु का भय त्याग कर, समय-स्थान की सीमाओं से पार ब्रह्मांडीय विचारधारा की धारक है और जिसके आचार-व्यवहार-किरदार में से अकाल पुरख, वाहिगुरु के दैवी गुणों की व्यवहारिक झलक नज़र आती है। ऐसा 'अकाली' शारीरिक कष्ट और मृत्यु के भय से रहित होकर, जबरदस्ती के शिकार मज़लूमों-मासूमों एवं असहाय लोगों की सुरक्षा के लिए इन्सानियत का पतन करने वाली क्रूर ताकतों के विरुद्ध संघर्षरत होने को अपना जीवन-उद्देश्य और धर्म समझता है। ऐसे किरदार का अभ्यासी 'अकाली' अकाल पुरख वाहिगुरु को राजाओं का राजा व पातशाहों का पातशाह तसलीम करता है और सभी सांसारिक सत्ताधारियों को उस सर्वशक्तिमान हस्ती के अधीन मानता है :

- सजणु सचा पातिसाहु सिरि साहां दै साहु।।
जिसु पासि बहिठिआ सोहीऐ सभनां दा वेसाहु।।
(पन्ना १४२६)

- राजन के राजा महाराजन के महाराजा
ऐसो राज छोडि अउर दूजा कउन धिआईऐ।।
(श्री दसम ग्रंथ)

सिक्ख इतिहास अनगिनत अकाली जाँनिसारों की कुर्बानियों से भरा पड़ा है। इनमें से ही एक शूरवीर हैं-- त्याग और कुर्बानी के मुजस्समे, निर्भीक योद्धा-अकाली फूला सिंघ, जो अत्याचारियों, हमलावरों, विदेशी लुटेरों की आँधी को रोकने और लोगों के दुख-दर्द से आँखें मूँद कर शाही ठाठबाठ का लुत्फ उठाने वाले बेपरवा और ग़ैर-ज़िम्मेदार हाकिमों से निजात पाकर हक, सच व न्याय की सत्ता की स्थापि के लिए खालसा पंथ एवं महाराजा रणजीत सिंघ के साथ हर फ्रंट पर आगे होकर लड़े और शहादत प्राप्त करने तक लड़ते रहे।

'द इन्साईक्लोपीडिया ऑफ सिक्खिज़म' (सम्पा प्रो. हरबंस सिंघ) के अनुसार, अकाली फूला सिंघ का जन्म १७६१ ई. में संगरूर ज़िले के नगर मूणक से पाँच किलोमीटर दूर पश्चिम दिशा में स्थित गाँव शीहां में हुआ। उनके पिता स. ईशर सिंघ निशानां वाली मिसल से

**डायरेक्टर, पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा इंस्टीटयूट ऑफ अडवांस्ड स्ट्डीज इन सिक्खिज़म बहादरगढ़ (पटियाला)— १४७०२१; फोन : ८७२७०-७७७२५*

सम्बन्धित थे, जो १७६२ ई. में बड़े घल्लूघारे के दौरान लड़ते हुए गंभीर रूप से घायल हुए थे। अपना अंतिम समय निकट आया जान कर उन्होंने अपने सुपुत्र फूला सिंघ के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी शहीद मिसल के एक जत्थे के प्रमुख बाबा नैणा सिंघ (नरैण सिंघ) को सौंपते हुए ताकीद की कि इसे पंथ का बच्चा समझ कर इसका पालन-पोषण करना और लोक-सेवा हेतु तैयार करना।

बाबा नैणा सिंघ ने अपनी सुयोग्य निगरानी में फूला सिंघ को गुरबाणी तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन के साथ-साथ शस्त्र-विद्या, घुड़सवारी और युद्ध-कौशल का प्रशिक्षण प्रदान किया। विचित्र बुद्धि का मालिक यह होनहार बच्चा, शास्त्र-विद्या और शस्त्र-विद्या दोनों में पूरी तरह से निपुण हो गया। १४ वर्ष की आयु में माँ के देहांत के पश्चात् घर-बार आदि का दायित्व अपने छोटे भ्राता संत सिंघ को सौंप कर फूला सिंघ अकाली वेशभूषा धारण कर बाबा नैणा सिंघ के जत्थे में स्थायी रूप से शामिल हो गया। बाबा नैणा सिंघ के देहांत के पश्चात् फूला सिंघ की योग्यता व प्रवीणता को देखते हुए इन्हें मिसल शहीदां के अकाली जत्थे का जत्थेदार स्थापित कर दिया गया।

मिसल शहीदां के शूरवीर योद्धाओं का यह अकाली जत्था गुरुधामों की सेवा-संभाल और उपद्रवी अहलकारों के विरुद्ध संघर्ष को विशेष प्राथमिकता देता था। अकाल-अकाल के जयकारे लगाने वाले इस पंथक दल के निर्भीक व जाँबाज योद्धाओं को 'अकाली' कहा जाता था। उच्च इख़लाक के धारक और बेबाक स्वभाव के मालिक अकाली फूला सिंघ को 'महान कोश' में भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'सतिगुरु के अकाली बाग़ का सुगंधि भरा फूल' कहा है। बिना किसी मजहबी भेदभाव के नि:सहाय लोगों की सुरक्षा करना, गरीबों की मदद करना, अकाली फूला सिंघ के जीवन का अहम अंग था। यही वजह है कि नौशहरा के निकट उनके शहीदी-स्थल पर बनी 'यादगार' हिंदुओं और सिक्खों की भांति मुसलमानों के लिए भी तीर्थ बनी रही है।

अपने शुभ गुणों के प्रभाव द्वारा अकाली फूला सिंघ ने जत्थे के समूह सिंघों (निहंगों) का योग्य नेतृत्व करते हुए गुरुद्वारा साहिबान और लोगों की भारी सेवा की। आप दमदमा साहिब व श्री अनंदपुर साहिब सहित विभिन्न गुरुधामों के प्रशासनिक सुधार के लिए अक्सर यात्रा करते रहते थे। १८०० ई. में इन्होंने श्री अमृतसर साहिब में श्री दरबार साहिब, श्री अकाल तख़्त साहिब तथा अन्य गुरुद्वारा साहिबान में से महंतों की मनमानियों को ख़त्म करवा कर सरोवर की कार-सेवा करवाई। इसके उपरांत इन्होंने अपने जत्थे का सदर मकाम स्थायी तौर पर श्री अमृतसर साहिब में ही स्थापित कर लिया। वर्तमान समय में उसी स्थल पर 'बुर्ज अकाली फूला सिंघ' सुस्थित है।

श्री अमृतसर साहिब के सिक्ख सरदारों की परस्पर खींचतान के कारण शहर की

बदइंतज़ामी के चलते १८०२ ई. में जब महाराजा रणजीत सिंघ ने गुरु की नगरी (श्री अमृतसर साहिब) को विशाल खालसा राज में शामिल करना चाहा तो भंगी सरदार बागी होकर मुकाबला करने के लिए तैयार हो उठे। अकाली फूला सिंघ ने इस आपसी ख़ून-खराबे को टाल कर समझौता करवा दिया और श्री अमृतसर साहिब का प्रबंध और निवासियों की सुरक्षा-सलामती, दूरअन्देशी के साथ महाराजा रणजीत सिंघ के हाथों में सौंपना बेहतर समझा। उन्होंने भंगी सरदारों को उनकी शान के मुताबिक जागीर दिला दी। इस बुद्धिमत्ता भरे फ़ैसले के फलस्वरूप अकाली फूला सिंघ का मान-सम्मान बहुत बढ़ गया। महाराजा रणजीत सिंघ के साथ अकाली जी की नज़दीकी इस कद्र बढ़ गई कि महाराजा प्रत्येक अहम मसले में अकाली जी से परामर्श लेते थे। अकाली फूला सिंघ ने पंजाब तथा हिंदुस्तान की आन और शान को मिट्टी में मिलाने वाले विदेशी आक्रमणकारियों की लूट-खसूट को रोकने के लिए विशाल व मज़बूत खालसा राज की स्थापि के महत्व को पहचान लिया था, इसी लिए वे खालसा राज की मज़बूती के लिए होने वाली सभी जंगों (कसूर, अटक, मुलतान, कश्मीर, हज़ारा, पेशावर आदि) में अपने जत्थे सहित अग्रणी रूप में लड़े। इसी दौरान उनके जत्थे में निष्काम अकाली शूरवीरों की तादाद में भारी वृद्धि हुई।

खालसा राज के सच्चे हितैषी अकाली फूला सिंघ के जीवन की घटनाओं के अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आता है कि उन्होंने कभी भी महाराजा रणजीत सिंघ के शासन को शख्सी या पारिवारिक शासन नहीं समझा। उन्होंने कई बार महाराजा के मनमाने फ़ैसलों और सिक्ख मर्यादा के उल्लंघन को बेबाकी व निडरता सहित हस्तक्षेप कर ठीक करवाया। पंथक मर्यादा की सुरक्षा के लिए भरे दीवान में महाराजा को तनख़्वाह लगाने से भी गुरेज़ नहीं किया।

अफगानों, डोगरों, फिरंगियों और विदेशी अहलकारों पर भरोसा करने के मामले में उनकी महाराजा रणजीत सिंघ के साथ अक्सर नाराज़गी रहती थी। १८०९ ई. में मिस्टर मेटकॉफ महाराजा रणजीत सिंघ के साथ संधि करने के लिए श्री अमृतसर साहिब आया। उसके साथ आए मुसलमान सैनिकों द्वारा ताज़िए का जुलूस श्री दरबार साहिब के सामने से निकालने की ज़िद के कारण अकाली सिंघों के साथ झगड़ा हो गया। महाराजा रणजीत सिंघ के हस्तक्षेप द्वारा टकराव खत्म हो गया। मेटकॉफ के साथ महाराजा की संधि को अकाली फूला सिंघ खालसा राज के हित में नहीं समझते थे। महाराजा के साथ मतभेद होने के कारण एक बार अकाली फूला सिंघ जत्थे सहित तलवंडी साबो और वहाँ से श्री अनंदपुर साहिब चले गए, मगर जब महाराजा ने किसी पंथक कार्य हेतु संदेश भेजा तो वे सब मतभेद भुला कर श्री अमृतसर साहिब लौट आए।

अकाली जी के जीवन का बड़ा हिस्सा संघर्ष में ही गुज़रा। १८२३ ई. में नौशहरा की सरहदी जंग के दौरान दिखाई बहादुरी उनके जीवन का लासानी कारनामा थी। इस जंग में उन्होंने बहादुरी के साथ लड़ते हुए हार को जीत में बदल कर पासा ही पलट दिया और शहादत प्राप्त कर गए। नौशहरा की लड़ाई का संक्षिप्त विवरण यहाँ देना उचित होगा।

खालसा राज की दिनो-दिन बढ़ रही ताकत को रोकने के लिए अफगानिस्तान का शासक अजीम खान पचास हज़ार से अधिक लश्कर के साथ लुंडे (काबुल) दरिया के किनारे पर आ डटा। दूसरी तरफ़ महाराजा रणजीत सिंघ भी अपनी फ़ौज और अकाली फूला सिंघ के जत्थे सहित पहुँच चुके थे। १३ मार्च, १८२३ ई. की रात को सलाह हुई कि अगली सुबह धावा बोला जाये। १४ मार्च की सुबह अरदास के बाद सूचना मिली कि रात में ४० तोपों सहित और बड़ी सेना दुश्मन की सहायता के लिए पहुंच गई है। महाराजा रणजीत सिंघ ने लाहौर से पहुँच रही अपनी तोपों के इन्तज़ार में दोपहर तक लड़ाई स्थगित करनी चाही, मगर अकाली फूला सिंघ की गई अरदास से पीछे हटना उचित न समझते हुए अपने जत्थे के करीब १५०० (८०० घुड़सवार और ७०० पैदल) सिंघों के साथ शत्रु-दल पर टूट पड़े।

यह देख कर महाराजा रणजीत सिंघ ने पूरी खालसा फ़ौज को लड़ने का तुरंत आदेश दे दिया। बेशक लड़ते हुए अकाली फूला सिंघ के शरीर पर कई गोलियाँ लगीं, लेकिन वे बहादुरी के साथ लड़ते हुए आगे बढ़ते गए। एक गोली लगने से उनका घोड़ा गिर पड़ा तो वे हाथी पर सवार होकर लड़ने लगे। अल्पसंख्यक खालसा फ़ौज ने बहादुरी और जोश के साथ लड़ते हुए वीरता के ऐसे कौशल दिखाए कि अफगान लश्कर के पैर उखड़ गए। दुश्मन फ़ौज भाग गई और मैदान ख़ालसा के हाथ रहा। इसी दौरान एक जिहादी द्वारा छिप कर चलाई गोली के कारण अकाली फूला सिंघ शहादत प्राप्त कर गुरु-चरणों में जा बिराजे। अकाली जी की शहादत विजेता खालसा फ़ौज के लिए चाहे बहुत बड़ी हानि थी परन्तु उसने ख़ालसा के अकेले सवा लाख के बराबर होने के विश्वास को सत्य साबित कर दिखाया।

अकाली फूला सिंघ ने अपनी लासानी शहादत द्वारा 'अकाली' शब्द के इतिहास में ऐसा जज़्बा भर दिया जो युगों-युगों तक हमारे लिए रौशनी मीनार बना रहेगा। अकाली आचार-व्यवहार के अभ्यासी किरदार के मालिक अकाली फूला सिंघ का जीवन, आधुनिक समय के अकालियों सहित हम सबका मार्गदर्शन करता है। उनका उच्च जीवन-स्तर, निजी स्वार्थों और मोह-माया से ऊपर उठ कर पंथ को समर्पित जीवन जीने की युक्ति सिखाता है और हमेशा सिखाता रहेगा।

बाबा बिकरम सिंघ

-डॉ. किरपाल सिंघ (दिवंगत)

जैसे दीवान मूल राज ने मुलतान और डेराजात में, सरदार चतर सिंघ ने हज़ारा एवं पेशावर में और भाई महाराज सिंघ ने माझा में बग़ावत की थी, उसी प्रकार बाबा बिकरम सिंघ ने हुशियारपुर के ज़िले-- अपने निवास-स्थान ऊना में बग़ावत का झंडा बुलंद किया था। एक तरह से बाबा बिकरम सिंघ की बग़ावत की इन सबसे अधिक महत्ता थी, क्योंकि उनके गाँव सहित सभी जलंधर-दोआबा क्षेत्र पर अंग्रेज़ों का सीधा कब्ज़ा हो चुका था और अंग्रेज़ों के विरुद्ध उठ कर उन्होंने व्यवहारिक रूप से उनकी दोआबा क्षेत्र पर हुकूमत मानने से इन्कार कर दिया था। इसके अलावा उन्होंने अंग्रेज़ों की धक्केशाही वाली नीति के विरुद्ध व्यवहारिक रूप से रोष प्रकट करते हुए जलंधर- दोआबा के अंग्रेज़ कमिशनर, जॉन लारेंस और गवर्नर जनरल हेनरी हार्डिंग की तरफ से दो बार की गई पेंशन की पेशकश ठुकरा दी थी।

बाबा बिकरम सिंघ का अंग्रेज़ सरकार के साथ समझौते से इन्कार करना स्वाभाविक था। उनके पिता बाबा साहिब सिंघ (बेदी) को महाराजा रणजीत सिंघ से पूर्व भी सभी सिक्ख सरदार अति मान-सम्मान की नज़र से देखते थे। गिरफ्न की लिखित के अनुसार एक बार पटियाला की सिक्ख फौजों ने बाबा साहिब सिंघ के संत-स्वभाव के सम्मान के रूप में उनके विरुद्ध लड़ने से इन्कार कर दिया था। पंजाब में मिसलों की हुकूमत के अंतिम समय में आपने जर्जर हो रही राज-प्रबंध की प्रणाली को देख कर सरबत्त खालसा की एक शक्तिशाली और संयुक्त सरकार की ज़रूरत महसूस की। उन्होंने महाराजा रणजीत सिंघ की संप्रबुता स्थापित करने में उनकी खूब सहायता की थी। महाराजा रणजीत सिंघ बाबा साहिब सिंघ का इतना सत्कार करते थे कि उन्होंने उन के जत्थे से अमृत छका। उस समय बाबा साहिब सिंघ पाँच प्यारों में शामिल थे। बाद में बाबा साहिब सिंघ ने ही महाराजा की ताजपोशी की रस्म अदा की थी। बाबा साहिब सिंघ के सत्कार के रूप में महाराजा ने उन्हें ऊना के निकट ७८ गाँवों की जागीर प्रदान कर दी थी। बाबा साहिब सिंघ हमेशा ही महाराजा रणजीत सिंघ का भरोसेमंद सलाहकार और धार्मिक रहनुमा था। उसी की प्रेरणा से महाराजा ने श्री ननकाणा साहिब के सिक्ख गुरुद्वारा साहिबान के नाम भारी जागीर लगाई थी।

१८३४ ई. में बाबा साहिब सिंघ के परलोक

गमन कर जाने पर बाबा बिकरम सिंघ ने अपने पिता की ज़िम्मेदारी संभाली। चाहे वे बाबा साहिब सिंघ के सबसे बड़े पुत्र नहीं थे, परंतु उनकी योग्यता और साहस के कारण बाबा साहिब सिंघ ने उन्हें अपना जानशीन नामज़द किया। अपने पिता की भाँति बाबा बिकरम सिंघ भी लाहौर के शाही ख़ानदान के शिक्षा-दाता और धार्मिक नेता बने रहे। महाराजा रणजीत सिंघ के निधन के बाद बाबा बिकरम सिंघ ने एक अन्य भावपूर्वक कार्य किया। उन्होंने सिक्ख बादशाही को विखंडित होने से बचाने के लिए महाराजा शेर सिंघ और संधावालिए सरदारों के मध्य समझौता करवा दिया।

अंग्रेज़ों के साथ टक्कर : १८४६ ई. में जब अंग्रेज़ों ने जलंधर-दोआबा को अपने राज में मिलाया तो इस इलाके के थोड़े-से बलवान जागीरदारों में से बाबा बिकरम सिंघ सबसे प्रसिद्ध थे। उनके पास दो लाख रुपए की जागीर थी, जिसमें १२ गाँव एवं नूरपुर, गुन्नाचौर और दक्षिणी सराए के मज़बूत किले भी शामिल थे।

जब जॉन लारेंस इस इलाके का कमिशनर बना तो उसने बाबा बिकरम सिंघ की ऊच्च पदवी व शक्ति को मुख्य रख कर गवर्नर जनरल के पास उनका विशेष रूप से ज़िक्र किया। उसने लिखा-- ''ऊना का रईस बाबा बिकरम सिंघ बाबा नानक के वंश में से है, इसलिए उसे सिक्खों का मुख्य ग्रंथी माना जाता है।'' सरकार ने सारी प्रजा को मुकम्मल तौर पर शस्त्रहीन करने का फ़ैसला कर लिया था। बाबा बिकरम सिंघ जागीरदार थे और उनके पास लाहौर दरबार के कानून के अनुसार अपने हथियार और गोला-बारूद था।

इस हालत में दोनों पक्षों के मध्य टकराव जारी था। इसका आरंभ तब हुआ, जब सरकार ने दोआबा के सभी सरदारों और ज़मींदारों से तोपों को इकट्ठा करने के लिए ब्रिगेडियर व्हीलर और उसकी पठान रेजिमेंट की ड्यूटी लगा दी। समझौते की ख़ातिर अंग्रेज़ सरकार ने साथ ही यह एलान कर दिया कि जो तोपें स्थानीय सरदारों से ली जाएंगी, उन्हें ढाल कर धातु उनके मालिकों को वापस कर दी जाएगी। ब्रिगेडियर व्हीलर ने अधिकांश प्रमुख लोगों से इस हुक्म की तामील करवा कर एक रात दक्षिणी सराए पर चढ़ाई कर दी। बाबा बिकरम सिंघ ने हमले से पहले सभी तोपें किले से हटा ली थीं और इस प्रकार उन्होंने कोशिशों को नाकाम बना दिया। इससे पहले कि व्हीलर दक्षिणी सराए पहुँच कर किले को तहस-नहस करता, तोपें ऊना पहुँच चुकी थीं। नकोदर के कमांडिंग आफिसर ने बाकायदा सवारों का एक दस्ता दक्षिणी सराए के किले में भेज दिया और उन्होंने बाबा बिकरम सिंघ के आफिसरों को चुंगी महसूल लगाने से रोक दिया।

इस पर बाबा बिकरम सिंघ ने जॉन लारेंस को एक चिट्ठी लिखी, जिसमें इस बात पर

सख़्त रोष प्रकट किया कि किले पर नाजायज कब्ज़ा किया गया है और अंग्रेज़ फ़ौजी सराए के निवासियों को अति प्रताड़ना पहुंचा रहे हैं। इसके साथ ही बाबा बिकरम सिंघ के वकील ने चीफ़ कमिशनर के मन में यह बात बैठाने का यत्न किया कि व्हीलर की इस कार्यवाही से बाबा बिकरम सिंघ का बहुत अपमान हुआ है। जॉन लारेंस का तो शुरू से ही यह पक्का विचार था कि बाबा बिकरम सिंघ के साथ ज्यादा नरम व्यवहार करना चाहिए, इसलिए वह मेजर व्हीलर के व्यवहार से शर्मिंदा हो गया और उसने उसे अंदरखाते समझाया कि सराए से फ़ौजी दस्ता हटा लेना चाहिए, इसलिए फ़ौजी दस्ते को वापस बुला लिया गया। लारेंस की दलील यह थी कि जलंधर-दोआबा के लोगों को नये नियमों का, जिनके माध्यम से हथियार रखने पर पाबंदी लगाई गई थी, पता नहीं था और इस इलाके को अंग्रेज़ी शासन में मिलाने के बाद इस तरह का कोई एलान जारी नहीं किया गया था, इसलिए वह महसूस करता था कि बाबा बिकरम सिंघ ने यह सब कुछ बेख़बरी के कारण किया है।

बाबा बिकरम सिंघ अंग्रेज़ कमिशनर के फैलाए हुए जाल में फंसने वाले नहीं थे। जब १० मई, १८४६ ई. को एक संदेश के माध्यम से जॉन लारेंस ने बाबा बिकरम सिंघ को सलाह दी कि वे तोपें सरकार के हवाले कर दें, तो २६ मई को बाबा जी ने बाअदब, परन्तु स्पष्ट रूप से जवाब देते हुए तोपें हवाले करने से इन्कार कर दिया। उसके ख़्याल में यह काम सबसे ज्यादा बेइज़्ज़ती वाला था। बाबा बिकरम सिंघ के इस दो-टुक जवाब से जॉन लारेंस को पता चल गया कि उसका सामना किसी आम आदमी के साथ नहीं था, इसलिए उसने बाबा बिकरम सिंघ को लिखा कि ''यदि मुझे सात दिन के अंदर तोपें पहुँचने की ख़बर न मिली तो मैं सरकार को रिपोर्ट कर दूंगा।''

उधर बाबा बिकरम सिंघ ने पहले ही पूर्व कार्यवाही की बाबत फ़ैसला कर लिया था। चाहे कुछ भी हो, वे अंग्रेज़ सरकार की धमकियों से डरने वाले नहीं थे।

जागीर ज़ब्त करना : जब बाबा बिकरम सिंघ ने किसी भी कीमत पर तोपें हवाले करना न माना तो जॉन लारेंस ने अगला कदम उठाया। उसने सरकार के पास सिफ़ारिश की कि सज़ा के रूप में बाबा जी की जागीर ज़ब्त कर ली जाने पर इसके बदले में उन्हें पेंशन की पेशकश की जाये। गवर्नर जनरल ने इस तजवीज़ के साथ सहमति प्रकट करते हुए कमिशनर को लिखा-- ''बाबा बिकरम सिंघ की जागीर को ज़ब्त करना बिल्कुल आधिकारिक कार्यवाही है। इस प्रकार वह उन साधनों से वंचित हो जाता है, जिनके माध्यम से सत्ताधारी सरकार को कोई नुकसान पहुँचा सकता है।'' इसके साथ ही उसने हुक्म कर दिया कि बाबा बिकरम सिंघ के सभी किले ध्वस्त कर दिए

जाएँ।

इन सभी बदलालऊ कार्यवाहियों का नतीजा केवल यह निकला कि बाबा बिकरम सिंघ और भी दृढ़ता के साथ अंग्रेज़ों का विरोध करने लगे। उन्होंने अपनी जागीरों के बदले ३१,२१२ रुपए वार्षिक पेंशन लेने से इन्कार कर दिया और बड़े उत्साह के साथ एक शक्तिशाली विरोधी पक्ष संगठित करने में जुट गए। उन्होंने भर्ती करनी शुरू कर दी। आस-पास के इलाके के नाराज़ हुए सरदारों के साथ तालमेल किया और जो दूर थे, उनको भी साथ मिलाने का यत्न किया।

अब जॉन लारेंस ने हुक्म जारी किया कि ऊना में बाबा बिकरम सिंघ के घर की पूरी तरह से तलाशी ली जाए और जो भी हथियार उनके कब्ज़े में हों, वे ज़ब्त कर लिए जाएँ, ताकि वे अंग्रेज़ सरकार को कोई नुकसान न पहुँचा सकें। तलाशी लेने वाला दल यह देख कर दंग रह गया कि बाबा जी ने बहुत-से हथियार अपनी जागीर के बाग़ में छुपाए हुए थे। इस दोष की सज़ा के तौर पर चीफ़ कमिशनर ने उनकी पेंशन घटा कर १२,००० रुपए की मामूली राशि में बदल दी। बाबा जी ने बड़ी हिकारत के साथ यह पेशकश भी ठुकरा दी।

पहाड़ों में बग़ावत : घटाई हुई पेंशन की पेशकश ठुकराने के बाद बाबा बिकरम सिंघ दिल से अंग्रेज़ों के विरुद्ध हथियारबंद बग़ावत करने में जुट गए। यह बग़ावत पहाड़ियों में करने का फ़ैसला हुआ। इसका कारण यह था कि १८४८ ई. के शुरू में कांगड़ा से सभी अंग्रेज़ रेजिमेंट वापस बुला ली गईं और नूरपुर के किले की रक्षक सेना घटा कर तीन कंपनियाँ कर दी गई थी। इस हालात का पूरा फ़ायदा उठा कर बाबा जी ने सभी नाराज़ पहाड़ी राजाओं को जत्थेबंद करना शुरू किया। उन्होंने लोगों की तरफ अपने सफ़ीर भेजे और उन्हें प्रेरणा की कि वे अंग्रेज़ों के विरुद्ध उठ खड़े हों। पहाड़ी राजा अपने आप को आज़ाद कराने के लिए हाथ-पैर मारने लगे।

बाबा बिकरम सिंघ जलंधर-दोआबा के सभी प्रसिद्ध व्यक्तियों से मिले। इनमें करतारपुर का स. लद्धा सिंघ भी था, जो सिक्ख गुरु साहिबान के वंश में से था और इस कारण इलाके में बड़ी इज्जत की नज़र के साथ देखा जाता था। बाबा जी ने उसे सलाह दी कि वह अंग्रेज़ों के साथ अंतिम जंग के लिए कमर कस ले। इसके अलावा बाबा जी, स. जोध सिंघ, स. सुंदर सिंघ और उनके मामा स. राम सिंघ से भी मिले, जिनकी इस इलाके में जागीर थी। इन सभी प्रसिद्ध रईसों ने बाबा बिकरम सिंघ के नाम पर भर्ती करनी शुरू कर दी।

क्योंकि बाबा जी की चुन्नौती पर बहुत-से प्रसिद्ध आदमी मैदान में आ डटे थे और आम तौर पर लोग उनके हक में थे, इसलिए हुशियारपुर का डिप्टी कमिशनर मिस्टर राबर्ट कस्ट घबरा गया और उसने जॉन लारेंस को

सलाह दी कि बाबा बिकरम सिंघ को पंजाब में से देश-निकाला देकर हरिद्वार भेज दिया जाए। लारेंस ने राजनैतिक दृष्टिकोण से यह तजवीज़ अस्वीकार कर दी। उसका ख़्याल था कि उस अवसर पर ऐसी किसी कार्यवाही के साथ एक तो बिना किसी ज़रूरत के अंग्रेज नीति की कड़ी आलोचना होगी और दूसरा, आम लोगों की हमदर्दी बाबा जी के प्रति हो जायेगी।

बाबा बिकरम सिंघ अच्छी तरह जानते थे कि केवल जलंधर-दोआबा की बग़ावत अंग्रेज़ों की शक्ति को नहीं हिला सकेगी, इसलिए उन्होंने इसका घेरा बहुत विशाल कर दिया। उन्होंने हज़ारा के गवर्नर सरदार चतर सिंघ के पास अपना वकील भेजा। हज़ारा के असिस्टेंट रेज़िडेंट कैप्टन जेम्स एबट ने इस बात की रिपोर्ट रेज़िडेंट को भेजते हुए लिखा-- ''बड़े विश्वास के साथ कहा जाता है कि सरदार चतर सिंघ, जिसने गाईड का बड़े आदर-मान के साथ स्वागत किया है, वह जलंधर से आया है। उसका नाम अछरा सिंघ है और वह सोढी ख़ानदान में से है। उसके वजूद के बारे में बहुत भेद रखा जा रहा है। प्रशासक (गवर्नर) यह पाखंड कर रहा है कि वह उसकी बाबत कुछ नहीं जानता। उसका नाम बड़ी मुश्किल से पता चला है। कुछ दिनों तक उसने पेशावर की तरफ चले जाना है। निश्चय ही वह किसी विशेष काम पर जा रहा है। मेरे ख़्याल में वह उन पुजारी जागीरदारों में से है, जिन्हें बग़ावत के कारण अपनी जागीर से वंचित कर दिया गया है।''

इस समय मूल राज ने मुलतान में बग़ावत कर दी। बाबा बिकरम सिंघ के लिए यह बग़ावत अंग्रेज़ों को बाहर निकालने के लिए एक प्रकार की चुन्नौती थी। उन्होंने पहाड़ी राजाओं को समझाया कि अंग्रेज़ों के विरुद्ध वार करने का यही उचित अवसर है। इस समय जॉन लारेंस ने एफ. करी को बिल्कुल ठीक लिखा था-- ''मेरे कानों में कई तरफ से अवाज पड़ रही है कि मौजूदा बग़ावत का मुख्य प्रस्तावक बाबा बिकरम सिंघ है। उसने इन मूर्ख राजाओं को, जो साधारण एवं गँवार आदिवासी हैं, भड़काया है कि अपनी स्वतंत्रता वापस लेने का यह उचित अवसर है।'' हुशियारपुर के डिप्टी कमिशनर राबर्ट कस्ट ने भी इससे पहले इसी प्रकार के विचार प्रकट किये थे। उसने लिखा था-- ''वह सभी साज़िशों का केंद्र है। अंब और गढ़शंकर के तहसीलदार, ऊना के थानेदार तथा अन्य कई ग़ैर-सरकारी आदमियों ने रिपोर्ट दी है कि बाबा बिकरम सिंघ आदमी भर्ती कर रहा है। उसने उन गाँवों में अपने प्रतिनिधि भेजे हैं, जो पहले उसकी जागीर में थे। वह खुल्लम-खुला प्रचार कर रहा है कि सरकार बदलने वाली है। वास्तव में वह जंगी कार्यवाही के लिए तैयार है और केवल अवसर की तलाश कर रहा है।''

बाबा बिकरम सिंघ की चुन्नौती पर सामने

आने वाले पहले आदमियों में से एक नूरपुर के राजा के मंत्री का पुत्र राम सिंघ था। जम्मू की पहाड़ियों में से फ़ौज इकट्ठी कर उसने चुपचाप रावी दरिया पार किया तथा शाहपुर किले पर कब्ज़ा कर लिया। जॉन लारेंस ने जातीय तौर पर स. राम सिंघ के विरुद्ध मुहिम का नेतृत्व किया। उसे बाग़ी एलान करते हुए स. राम सिंघ के किले पर गोलाबारी की और स. राम सिंघ को झनायों से पार राजा शेर सिंघ के कैंप की तरफ भागने के लिए विवश कर दिया। राजा शेर सिंघ पहले से ही बाग़ी होकर फौज सहित अपने पिता स. चतर सिंघ से मिलने के लिए जा रहा था।

इसी समय जसवान और दातारपुर के पहाड़ी राजाओं ने भी बग़ावत कर दी और हाजीपुर से लेकर रोपड़ तक जसवान वादी का सारा इलाका अंग्रेज़ों के लिए बग़ावत का केंद्र बन गया। इसके अलावा कांगड़ा का कटोच राजा भी बाग़ी हो गया और उसने रिआब तथा अंभेमनपुर के पड़ोसी किलों पर कब्ज़ा कर लिया। बाबा बिकरम सिंघ जसवान राजा की फ़ौज को कुमक पहुँचाने के लिए तेज़ी के साथ आगे बढ़े, परन्तु दुर्भाग्यवश बाबा बिकरम सिंघ के पहुँचने से पहले ही राजा की पराजय हो गई।

द्वितीय अंग्रेज़-सिक्ख युद्ध में शामिल होना : पहाड़ी राजाओं की पराजय होने से बाबा बिकरम सिंघ मैदान में अकेले रह गए। उन्होंने राजा शेर सिंघ, जिन्होंने इस समय तक बग़ावत कर दी थी, की फौज के साथ मिलना उचित समझा। इस उद्देश्य के लिए बाबा जी ने दिसंबर, १८४८ ई. में श्री हरिगोबिंदपुर से ब्यास दरिया पार किया और तेज़ी के साथ अटारी वाले सरदार की फौज के साथ जा मिले। अंग्रेज़ सरकार बाबा जी के बच कर निकलने तथा दूसरे बागियों के साथ मिलने पर बहुत छटपटायी और नतीजतन उनकी गिरफ़्तारी के लिए दो हज़ार रुपए के इनाम का एलान किया गया।

प्रतीत होता है कि बागियों की बड़ी फ़ौज के साथ मिलने के बाद बाबा बिकरम सिंघ ने इस मुहिम का राजनैतिक नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया। यह सोच कर बारकज़यी सरदारों की मदद के बिना अंग्रेज़ों को बाहर निकालना असंभव है, उन्होंने सरदार चतर सिंघ को प्रेरित किया कि वह अमीर दोस्त मुहम्मद खान, सरदार सुलतान मुहम्मद और पीर मुहम्मदधारी के साथ गठजोड़ कर ले। बाबा जी ने कश्मीर के पूर्व गवर्नर इमाम-उद्-दीन, जो उस समय सक्रियता के साथ अंग्रेज़ों के हक में काम कर रहा था, को एक चिट्ठी भेजी, जिसमें यह लिखा कि ''देश के सभी हिंदू और मुसलमान इस समय जुड़ बैठे हैं। उन्होंने समझ लिया कि वफ़ादार प्रजा और अपने-अपने धर्म के रक्षकों के रूप में उनका क्या कर्त्तव्य है। दोस्त मुहम्मद, दुनियावी मामलों की अपेक्षा सरकार

की मित्रता के सम्मान की ज्यादा कीमत आंकता हुआ अपनी फ़ौज सहित इधर कूच कर रहा है। सरदार सुलतान मुहम्मद तथा पीर मुहम्मदधारी, जो पहले हमारे शासन के दुश्मन थे, ने भी इस अवसर को पुन: सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उचित समझा है। मैं यह मिलन करवाने में सफल हुआ हूं और मुझे पूर्ण आशा है कि वे मेरी तजवीज़ों के पाबंद रहेंगे।''

इसके बाद बाबा जी ने उसे अपील की कि वह अंग्रेज़ों की गुलामी से अपने देश को छुटकारा दिलाने के पवित्र और सामूहिक उद्देश्य में उनके साथ मिल जाए। बाबा बिकरम सिंघ ने लिखा, ''चाहे मेरे लिए आपकी तरफ चिट्ठी लिखनी अनावश्यक थी, मगर आपकी पिछली सेवाओं का ख़्याल कर मैंने यह अपील करना उचित समझा है। यह समय बड़ा शुभ है। अगर आपकी रुचि, बुद्धिमत्ता और वफ़ादारी के साथ चलने वाली बन जाए तो आप अपने कल्याण को सुनिश्चित बना लोगे। अगर आप हमारे साथ मिलना उचित नहीं समझते, तो कम से कम सरदार नरायण सिंघ के साथ ही मिल जाओ। मैं और ज्यादा लिखने की ज़रूरत नहीं समझता, क्योंकि आप सरकार के शुभचिन्तक व वफ़ादार हो। आप उन सेवाओं का कोई ख़्याल नहीं करोगे, जो आपने कुछ समय पहले अंग्रेज़ों को प्रदान की हैं।'' इमाम-उद-दीन पर इस अपील का कोई प्रभाव न पड़ा और उसने यह चिट्ठी एफ. करी के हवाले कर दी।

चेलिआं वाला और गुजरात की लड़ाई के बाद बग़ावत के सर्वोच्च नेताओं का एक समारोह रावलपिंडी में हुआ। इस जलसे में भाई महाराज सिंघ ने तजवीज़ पेश की कि अंग्रेज़ों को बाहर निकालने के लिए एक अन्य लड़ाई लड़ी जाए। बाबा बिकरम सिंघ एकमात्र अगुआ थे, जिन्होंने इस तजवीज़ की जोश के साथ प्रौढ़ता की, जबकि बाकी सभी अधीनता स्वीकार कर लेने के हक में थे।

जब रावलपिंडी के समारोह में बहुसम्मति द्वारा -फ़ैसले की तसदीक हो गई तो बाबा बिकरम सिंघ ने अटारी वाले सरदारों के साथ ही हथियार डाल दिए। अटारी वाले सरदारों तथा अन्य बाग़ी नेताओं की भाँति जिन्हें कुछ पाबंदियों के अधीन अपने-अपने कसबों में रहने की सुविधा प्रदान की गई थी, अंग्रेज़ सरकार ने बाबा बिकरम सिंघ को अपने घर ऊना जाने देना उचित न समझा। बाबा जी के लिए एकमात्र रास्ता यह रह गया कि वे अपने जीवन के शेष दिन गुरु की नगरी श्री अमृतसर साहिब में गुज़ार दें। यहीं पर वे १८६३ ई. में परलोक गमन कर गए।

भक्ति का निज रूप है नारी, शक्ति का स्वरूप है नारी

*–डॉ. मनजीत कौर**

आलेख का प्रारम्भ अपनी कविता की चंद पंक्तियों से करना चाहूंगी :

ईश्वर की सर्वोत्तम रचना,
जिसे बनाया प्रभु ने सृजनहारी !
भक्ति का निज रूप है नारी,
शक्ति का स्वरूप है नारी !
संस्कृति की नींव है नारी,
कली–फूल–फल–बीज है नारी !
सूर्य–सी तेजस्विनी है नारी,
चन्द्रमा–सी शीतलता है नारी !
धरती का धैर्य है नारी,
सब कुछ सहती, पर कभी न हारी !
संस्कारों की मूरत है नारी,
धर्म का अभिप्राय है नारी !
सागर–सी अथाह है नारी,
भटकों के लिए राह है नारी !
कितने भी हों आलीशान बंगले,
घर का रूप देती है नारी !
तेरी सूरत प्यारी, सीरत प्यारी,
तू तो है सबसे न्यारी !
बराबरी का प्रश्न कहां है ?
तू तो है गुणों का पिटारी !
ईश्वर की सर्वोत्तम रचना,
जगत का अस्तित्व है नारी !

बेशक जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु पुरुष और नारी का समान महत्व है, लेकिन नारी को हर युग में, हर पक्ष से कमजोर मानने की गुस्ताखी हुई है। भारतीय समाज प्राचीन काल से ही पितृ–सत्तात्मक माना गया है। परिणामस्वरूप नारी के कार्यों की धुरी पति की अनुकूलता पर निर्भर बनी रह कर ही घूमती थी। केवल भारतीय समाज में ही नारी की दशा दीन–हीन नहीं मानी गई, अपितु विकसित (पश्चिमी) देशों के विद्वान भी औरत को पुरुष के बराबर दर्जा देने का हौसला नहीं कर पाए। अरस्तु ने पुरुष को सुपीरियर तथा स्त्री को इन्फीरियर माना। जे. गोथ को स्त्री में नूर नजर नहीं आया। शेक्सपियर का मानना है कि कमजोरी का दूसरा नाम स्त्री है। मनु का फैसला है–– स्त्री अज्ञान एवं झूठ की मूर्त है। कुछ धर्म–पुस्तकों में नारी को माया, सर्पनी, बाघिन, कुलटा तथा कलंकिनी तक कह कर अपमानित किया गया। गोस्वामी तुलसीदास ने तो नारी का दर्जा पशु और गँवार से ऊँचा नहीं माना। उनकी

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर–३०२००४, फोन : ९९२९७–६२५२३*

मान्यता रही :

ढोर, गँवार, शूद्र, पशु, नारी।
सकल ताड़न के अधिकारी।

इसलाम में दो स्त्रियों की गवाही एक पुरुष की गवाही के बराबर मानी गई है। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक पातशाह की अपार रहमतों की एक तसवीर मेरे समक्ष आ गई है। पहले मैं आपसे वह साझा करना चाहूँगी। कुछ वर्ष पूर्व की घटना है, हमारे स्थानीय गुरुद्वारा साहिब से मुख्य सेवादार 'प्रधान जी' तथा एक और सज्जन मेरे घर आए और बोले, ''बेटा! आज एक बहुत जरूरी काम से तुम्हारे पास आए हैं।'' मैंने बड़ी विनम्रता से कहा, ''हुक्म कीजिए! मेरे लायक क्या सेवा है?'' जिस (अमुक) विषय पर उन्होंने बात करनी थी, मुझसे पूछा कि ''तुम्हें बेटा उस बाबत पूरी जानकारी है?'' मैंने कहा, ''हां जी!'' उनका सवाल था-- ''बेटा! क्या गुरुद्वारा साहिब की मीटिंग में इस तथ्य को पूरी तरह से बयान करोगी?'' मैंने कहा, ''जरूर करूंगी।'' मैं उस समय भावविभोर हो गई, जब उन्होंने कहा, ''बेटा! बहुत-बहुत शुक्रिया! पता है तुम्हें, तुम्हारी गवाही, दो पुरुषों की गवाही के समान मानी जाएगी!'' धन्य हैं गुरु नानक पातशाह! कितना सम्मान प्रदान किया है आपने हम महिलाओं को! यह सब उनके मार्गदर्शन द्वारा ही संभव हुआ है। मेरे नेत्र सजल हो गए। कहाँ दो स्त्रियों की गवाही एक पुरुष की गवाही के बराबर मानी जाती थी और कहाँ आज एक सिक्ख स्त्री की गवाही दो पुरुषों की गवाही के बराबर . . . !

यह अपार अनुकम्पा थी मध्य काल में अकाल पुरख वाहिगुरु की ज्योति को घट-घट में पहचानने वाले सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक, महान समन्वयकारी धन्य-धन्य श्री गुरु नानक देव जी की, जिन्होंने नारी के हक एवं सम्मान में नारा बुलंद किया तथा नारी को पुरुष से निम्न समझने के सिद्धांत को मूलत: गलत सिद्ध कर दिखाया अमृतमयी बाणी में नारी के हक में विलक्षण उद्‌बोधन कर :

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु।।
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु।।
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु।।
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान।।
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ।।
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ।।
जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि।।
नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि।।

(पन्ना ४७३)

गुरु जी का पावन फरमान है कि स्त्री से ही व्यक्ति जन्म लेता है, स्त्री से ही व्यक्ति के शरीर की रचना होती है, स्त्री के माध्यम से ही समस्त सम्बंध बनते हैं और स्त्री से ही जगत-उत्पत्ति का मार्ग चलता है। एक स्त्री की मृत्यु हो जाने पर पुन: अन्य स्त्री की खोज शुरू हो जाती है और स्त्री से ही अन्य सबसे साथ सम्बंध

स्थापित होते हैं। नारी को निम्न क्यों कहा जाए? नारी ही ऋषियों-मुनियों आदि की जननी है। स्त्री से ही स्त्री उत्पन्न होती है। संसार का कोई भी जीव स्त्री के बिना पैदा नहीं हो सकता। केवल और केवल ईश्वर ही है जो स्वयं से प्रकाशवान है। जो सदैव अपने मुख से प्रभु के गुण गाता है, उसका भाग्य उज्जवल होता है। हे नानक! प्रभु का गुणगान करने वाला मुख ही सच्चे परमेश्वर के दरबार में सुंदर लगता है।

स्त्री के कुछ विशिष्ट गुण हैं-- दया, संतोष, धैर्य, सहज, क्षमा, मधुरता तथा विनम्रता। ये वे गुण हैं जिनके फलस्वरूप स्त्री अपने पति का प्रेम प्राप्त करती है। वास्तव में यही वे गुण हैं जिनकी बदौलत प्रियतम-प्रभु का प्रेम पाया जा सकता है। ये गुण स्त्री में पहले से ही मौजूद हैं अर्थात् ईश्वर-प्रदत्त हैं, जबकि पुरुष को इन गुणों को धारण करने हेतु विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। सच्चे अर्थों में तब स्त्री ही पुरुष की मार्गदर्शिका बनती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अनेक पंक्तियां इस संदर्भ में अंकित हैं :

जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुंणी।।
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी।।
पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी।।

(पन्ना १७)

अर्थात् हे सत्संगी बहनों! बेशक जाकर किसी सुहागिन (जिसने प्रभु को पा लिया है) से पूछ लो कि तुमने किन गुणों से प्रभु-मिलाप प्राप्त किया है, यही मालूम होगा कि उन्होंने स्थिर, संतुष्ट एवं मधुर बाणी से अपने जीवन का शृंगार किया है। आनंददायक प्रभु रूपी पति प्रियतम तभी मिलता है, जब गुरु के उपदेश को ध्यानपूर्वक सुना जाए। इस संदर्भ में बाबा शेख फरीद जी का पावन शबद है :

निवणु सु अखरु खवणु गुणु
जिहबा मणीआ मंतु।।
ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु।।

(पन्ना १३८४)

अर्थात् हे बहन! झुकना अक्षर है, सहना गुण है, मीठा बोलना शिरोमणि मंत्र है। यदि कोई जीव-स्त्री ये तीन वेश धारण कर ले तो प्रियतम प्रभु उसके वश में आ जाएगा।

गुरबाणी के पावन सिद्धांत के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्मांड में जितने भी जीव हैं, वे समस्त जीव-स्त्रियां हैं। पुरुष तो केवल एक परिपूर्ण परमात्मा ही है। गुरबाणी आशयानुसार स्त्री-पुरुष का अन्तर स्वत: ही समाप्त हो जाता है जब हृदय से यह सत्य स्वीकार कर लिया जाए कि पुरुष तो केवल एक प्रभु ही है। वैसे गुरबाणी में जीवात्मा तथा परमात्मा का सम्बंध बहुतायत से स्त्री-पुरुष रूपाकार में ही स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार परमात्मा रूपी पति को पाने हेतु जीवात्मा रूपी स्त्री को जिन गुणों की परम आवश्यकता है, वे गुण स्त्री में बहुतायत से पहले ही ईश्वरीय अनुकम्पा से मौजूद हैं। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने इस

संदर्भ में फरमाया है :

निज भगती सीलवंती नारि।।
रूपि अनूप पूरी आचारि।।
जितु ग्रिहि वसै सो ग्रिहु सोभावंता।।
गुरमुखि पाई किनै विरलै जंता।। (पन्ना ३७०)

गुरु जी के चिंतनानुसार केवल प्रभु की भक्ति ही वह शीलवान नारी है, जिसका रूप अनुपम है और जिसका आचरण पूर्ण है। भक्ति रूपी नारी जिस घर में आ बसती है, वह घर शोभायुक्त हो जाता है।

यही नहीं, भक्ति रूपी स्त्री को समस्त परिवार में श्रेष्ठ मानते हुए श्री गुरु अरजन देव जी का ही पावन फरमान है :

सभ परवारै माहि सरेसट।।
मती देवी देवर जेसट।।
धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ।।
जन नानक सुखे सुखि विहाइ।। (पन्ना ३७१)

अर्थात् सम्पूर्ण आध्यात्मिक परिवार में स्त्री सर्वश्रेष्ठ है तथा देवर-जेठ रूपी इन्द्रियों को सही परामर्श देने वाली है। गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वह हृदय रूपी घर भाग्यशाली है जिस घर में भक्ति रूपी स्त्री आकर प्रकट होती है।

गुरबाणी में ऐसी स्त्री को 'बतीह सुलखणी' अर्थात् बत्तीस गुणों को धारण करने वाली सर्वगुण-सम्पन्न माना गया है। पंचम पातशाह इन गुणों की धारक स्त्री को आशीष प्रदान करते हैं कि वह मायके तथा ससुराल में सदैव सुखी बसे :

पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु।।
गुर मिलि चजु अचारु
सिखु तुधु कदे ने लगै दुखु।। (पन्ना ५०)

विचारणीय तथ्य यह है कि गुरु साहिबान के उपकार, उनके द्वारा चलाई गई नारी चेतना, संगत और पंगत की मर्यादा द्वारा समन्वय एवं भातृ-भावना का संदेश तथा नारी के सम्मान एवं गौरव हेतु बुलंद किए गए नारे-- ''सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान॥'', ''सभ परवारै माहि सरेसट॥'' आदि मान-सम्मान तथा शिक्षा समूचे विश्व के लिए अनुकरणीय है। इस संदर्भ में अगर विचार करें तो विशेष तौर पर सिक्ख स्त्री को आत्मचिन्तन की महती आवश्यकता है। क्या हम गुरु साहिबान द्वारा मिले गौरव एवं मान-सम्मान के अनुसार जीवन-यापन कर रही हैं? हम अपने मूल कर्त्तव्यों का निर्वहण करने हेतु संलग्न हैं या मात्र विशेषाधिकारों का ढिंढोरा पीटने तक ही सजग हैं? क्या हम गुरु साहिबान के उपकारों को विस्मृत कर आज भी मानवीय मूल्यों को तिलांजली देकर कन्या-भ्रूण-हत्या, दहेज-प्रथा, पुत्र-मोह आदि कुरीतियों में लिप्त हैं?

गुरबाणी आशयानुसार जीवन बना कर ही हमें फख्र होना चाहिए स्वयं के नारी होने पर। फिर बेटी की माँ होने पर भी फख्र होना चाहिए। साथ ही बेटी की परवरिश भी इस प्रकार होनी

चाहिए कि उसे भी फख्र हो बेटी होने पर। जब वह ससुराल-घर जाए तो उसे विदा करना है संस्कारों का दहेज देकर, जैसा कि श्री गुरु रामदास जी का पावन निर्देश है :

हरि प्रभु मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो।।
हरि कपड़ो हरि सोभा
देवहु जितु सवरै मेरा काजो।। *(पन्ना ७८)*

जब कोई बच्ची अपने पिता से हरि-नाम रूपी दहेज लेकर ससुराल-घर जाएगी, उसका विवाह-मनोरथ सफल, सुंदर और सुखदायी सिद्ध होगा। गुरबाणी आशयानुसार चलने से जीवन रूपान्तरित होने लगता है जहाँ से कुरीतियां स्वत: ही तिरोहित हो जाती हैं।

सिक्ख इतिहास में अनेक महान स्त्रियों ने जीवन-आदर्श प्रस्तुत किया है-- माता त्रिपता जी, बेबे नानकी जी, माता खीवी जी, बीबी भानी जी, बीबी अमरो जी, माता गंगा जी, माता गुजरी जी, माता सुंदरी जी आदि। गुरु-मंजियों की प्रचारक सेवारत महिलाओं, जंगे-मैदान में शौर्य-प्रदर्शन करने वाली बीबी शरण कौर, बीबी रूप कौर, माता भाग कौर, यही नहीं गुरु-काल से लेकर गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर, अकाली लहर के मोर्चों तक सिक्ख स्त्रियों ने पंथक सेवा में जी-जान से सहयोग दिया तथा गौरवमयी स्वर्णिम इतिहास-सृजना में अमूल्य योगदान दिया। सिक्ख पंथ ने उनकी स्मृति और आदर्शों का अभिनन्दन करते हुए अपनी नित्य होने वाली अरदास में उन सिंघों के साथ-साथ सिंघणियों को भी सिजदा किया।

वर्तमान में विचारणीय तथ्य है कि हमारा विरसा कितना अमीर है और आज हम पाश्यात्य रंग में ढलने में ही अपनी शान समझ बैठे हैं। गुरु साहिबान ने स्त्री को जो सम्मान, गौरव और रुतबा प्रदान किया उसे कुल का उद्धार करने वाली कह कर गौरवान्वित भी किया :

कुलु उधारहि आपणा धंनु जणेदी माइ।।
(पन्ना २८)

जो स्त्री अपने गुणों से, अपने किरदार से केवल अपने परिवार का ही नहीं, अपितु सामाजिक वातावरण को भी खुशहाल और समृद्ध करने वाली, गृहस्थ एवं आध्यात्मिक जीवन की पूरक गुरु साहिबान की कृपा की विशेष पात्र बनी है, आज जरूरत है उसे अपने आप पर फख्र महसूस करते हुए, अपने दायित्वों का बाखूबी निर्वहण करते हुए गुरु पातशाह द्वारा मिले आशीर्वाद-स्वरूप मान-सम्मान की सुगंध, नेक कर्मों व सुसंस्कारों द्वारा सर्वत्र बिखेर कर अपना जीवन सफल बनाने की! केवल ८ मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ही नहीं, अपितु हर पल, हर दिन सार्थक करते हुए गुरु-कृपा की पात्र बनकर नित्य गौरवान्वित एवं सम्मानित अनुभव करते की!!

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु

*-बीबी जशनप्रीत कौर**

मोह-माया के अधीन रहने वाले मानव का आचरण भी मोह-माया के साथ एक-सा हो जाता है। फिर उसका उद्देश्य धन-पदार्थ आदि एकत्रित करना ही बन जाता है। ऐश-ओ-आराम की खोज करता हुआ मानव बुरे कर्म करने से भी गुरेज़ नहीं करता। आज के तकनीकी युग ने मानव को हर प्रकार का सुख प्रदान किया है। इन सुखों की प्राप्ति के लिए मानव के पास पैसा होना ज़रूरी है। पैसा कमाने के लिए मानव असंभव कार्य करने के लिए भी तैयार रहता है। आज के समय में बढ़ती बेरोज़गारी, नशीली वस्तुओं का सेवन, व्यवसाय की कमी ने मानव को निठल्ला बना दिया है और वह ज्ञानेंद्रियों के वश में होकर विकारों में फंस रहा है। सांसारिक पदार्थों में उलझे मानव ने सामाजिक रिश्तों को तार-तार कर दिया है। लचर गायकी, मनोरंजन के कृत्रिम साधनों ने मानव को नैतिक जीवन-मूल्यों से कोसों दूर कर दिया है। अनैतिकता के कारण मानव का मानसिक संतुलन बिगड़ गया है। उसके अंदर सामाजिक रिश्तों के प्रति किसी भी प्रकार की लज्जा नहीं रही। श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री को ऊँचा स्थान प्रदान किया, परन्तु आज उसी स्त्री का शोषण हो रहा है। उसका कोख में ही कत्ल-ए-आम किया जा रहा है। जिन कुरीतियों का गुरु साहिबान ने पुरज़ोर विरोध किया वे सब आधुनिक वैज्ञानिक युग में घर कर गई हैं। सांसारिक पदार्थों की कमी न होने के कारण मानव अहंकारग्रस्त हो गया है। विज्ञान ने लोगों को धर्म से विमुख कर दिया है। नौजवान पीढ़ी ने अपना स्वरूप बिगाड़ लिया है और अनैतिकता में धंस रही है। धर्म-स्थानों की जगह तथाकथित बाबा लोगों के डेरों ने ले ली है और वे लोगों को भ्रमित कर सुख-आराम भोग रहे हैं। मानव ही मानव के साथ ईर्ष्या किए जा रहा है। धर्म के नाम पर देशों में युद्ध छिड़ रहे हैं। भक्त शेख फ़रीद जी फरमान करते हैं कि हे मानव! यदि तू ख़ुद को समझदार, सुलझा हुआ समझता है, तो दूसरों के प्रति गलत न बोल। अपने आप को सुलझा हुआ मानने से पहले यह देख कि जो कर्म तू कर रहा है क्या वे सही हैं? क्या तू सच्चे गुरु के साथ जुड़ा है? भक्त शेख फरीद जी का फरमान है :

**श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी, फतिहगढ़ साहिब, फोन : ९११५१-२७१४१*

फरीदा जे तू अकलि लतीफु
काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि
सिरु नीवां करि देखु ॥ *(पन्ना १३७८)*

प्राकृतिक नज़ारे परमात्मा के हुक्माधीन कार्य कर रहे हैं। प्रत्येक वस्तु परमतत्व द्वारा निर्धारित नियमानुसार चलती है। आधुनिक मानव ने तकनीकी युग के अधीन होकर प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करनी आरंभ कर दी है, जिस कारण उसका विनाश हो रहा है। परमात्मा की बनाई जो वस्तु उसके नियमों से विपरीत चलती है उसका नाश अनिवार्य है। सूरज, चाँद, धरती, ग्रह, दिन, रात, सब परमात्मा के बनाए नियमानुसार कार्य कर रहे हैं। इन प्राकृतिक नज़ारों के खुदमुख्तार होने से समय दुखदायी हो सकता है, इसलिए सभी प्रभु के हुक्म में रहकर मर्यादा बनाए रखते हैं :

भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥
भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥
भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥
भै विचि धरती दबी भारि ॥ *(पन्ना ४६४)*

मात्र एक निरंकार ही है जो किसी के अधीन नहीं है, वरना सभी जीवों के माथे पर भय रूपी लेख लिखे हुए हैं। परमात्मा का नियम ही ऐसा है कि सबको उसका हुक्म मानना पड़ता है :

सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥
(पन्ना ४६४)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का उपदेश है कि मानव शरीर परमतत्व के हुक्मानुसार प्राप्त होता है। हमारे शरीर का चलना-फिरना भी मर्यादा के अधीन है। जब तक प्रभु का हुक्म है, तब तक ही शरीर में प्राण हैं। परमात्मा की रज़ा में रहने के लिए मानव को सभ्य जीवन-मूल्य धारण करने पड़ते हैं। उसका व्यवहार विशुद्ध और इज्जत भरपूर होना चाहिए। विशुद्ध किरदार वही होता है जिसमें परमात्मा की इच्छा ज़ाहिर होती है :

जो तुधु भावै साई भली कार ॥ *(पन्ना ३)*

आध्यात्मिक पदवी प्राप्त करनी और नैतिकता के मार्ग पर चलना दर्शन-शास्त्र के विषय हैं, जिनका अधिक से अधिक अध्ययन करने से इनके प्रति रुचि और भी बढ़ती जाती है। धर्म एवं सदाचार का आपस में पक्का सम्बन्ध है। एक-दूसरे के बिना दोनों के अर्थ व्यर्थ हैं। यदि धर्म को ग्रहण करना है तो अच्छा आचरण ग्रहण करना पड़ेगा और यदि हम अच्छे आचरण के मालिक हैं तो हम अपने आप धर्म के रास्ते पर चल पड़ेंगे। आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रभु की बंदगी के साथ-साथ नेक और अच्छा व्यवहार धारण करना भी अनिवार्य है :

सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥

विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ (पन्ना ४)

विश्लेषणात्मक दृष्टि से अध्ययन करने से पता चलता है कि ईश्वर के साथ जुड़ने का मार्ग नेक और सच्चा किरदार ही दिखा सकता है। एक सभ्याचार के अधीन कई प्रकार के समाज विचरण कर रहे होते हैं, जिन्होंने अपने धर्म के जीवन-मूल्यों, रीति-रिवाज़ों के अनुसार जीवन-युक्ति धारण की होती है। नैतिक जीवन-मूल्यों के अधीन मानव का अच्छा और गुणों से भरपूर व्यवहार शामिल किया जाता है, जो समाज को विकासशील दिशा प्रदान करता है। नैतिक जीवन-मूल्यों की बात करने से पहले नैतिकता की परिभाषा पर एक नज़र मार ली जाये। विभिन्न धर्मों, विद्वानों ने नैतिकता की परिभाषा कुछ इस प्रकार पेश की है- '' नैतिकता का अंग्रेज़ी अनुवाद 'Ethics' है। 'Ethics' शब्द यूनानी शब्द 'ईथोस' से निकला है, जिसके अर्थ रिवाज़, प्रयोग एवं स्वभाव के हैं।''[१]. ''ऋग्वेद में 'ऋत' शब्द नैतिक नियम के लिए इस्तेमाल किया जाता है। 'ऋत' ब्रह्मांड की एक व्यवस्था है, नीति-प्रचालन का एक प्रबंध। इसका विलोम अनरित (झूठ) है। 'ऋत' सच्चाई है।''[२]. ''अरबी, फ़ारसी और उर्दू जुबानों में नैतिकता को 'अखलाक' कहते हैं। इस्लाम में सबसे अधिक अखलाक पर ज़ोर दिया गया है। कुरान में उन सभी नैतिक बातों का ज़िक्र करते हुए, जिन्हें हम नैतिक मानते हैं, आख़िर में कहा गया है कि सबसे बड़ी अनैतिकता ईश्वर से विमुख (प्रतिकूल) होना है।''[३].

नैतिक जीवन-मूल्य मानव के आध्यात्मिक विकास के लिए ज़रूरी हैं। प्रत्येक समाज इनसे प्रभावित होता है। समाज-सुधारकों ने अमानवीय समाज में विचरण करते हुए मानव का जीवन-स्तर ऊँचा उठा कर मानववादी होने का संदेश दिया है। सदाचार से तात्पर्य अच्छा आचार, अच्छा चाल-चलन, अच्छा व्यवहार आदि है।''

सिक्ख धर्म का आगमन श्री गुरु नानक साहिब जी के प्रकाश (आगमन) से हुआ। श्री गुरु नानक साहिब जी के प्रकाश के समय संसार में अराजकता फैली हुई थी। मुसलमान अपने असल जीवन-राह से भटक चुके थे। ब्राह्मण वर्ग ने अपने हित के लिए समाज को चार श्रेणियों में बाँट कर जाति-भेदभाव को जन्म दिया। असत्य की दीवार ने मानव सोच को अनैतिकता के चौगिरदे में बंद कर दिया था :

बेद कतेब भुलाइ कै
मोहे लालच दुनी सैताणे।
सचु किनारे रहि गिआ
खहि मरदे बाम्हणि मउलाणे। (वार १:२१)

तथाकथित शूद्र लोगों के साथ बुरा

व्यवहार कर उनका जीवन-स्तर इतना निम्न कर दिया था कि वे अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए उच्च श्रेणी का विरोध करने से भी गुरेज़ करते थे। हर तरफ़ झूठ का बोलबाला था। फोकट के वहम-भ्रम, पाखंडवाद सामाजिक व्यवस्था का नाश कर रहे थे। ब्राह्मण मंत्रों को पढ़ने पर अपना अधिकार मानते थे और तथाकथित शूद्रों को यह कह कर दुत्कार दिया जाता था कि पूर्व जन्म में किये बुरे कर्मों का दुख वे भोग रहे हैं तथा मुक्ति की प्राप्ति के लिए उन्हें ऊँची कुल में जन्म लेना पड़ेगा। भ्रष्ट हो चुके समाज के प्रति गुरबाणी में फरमान है :

कलि कलवाली कामु मदु
मनूआ पीवणहारु ॥
क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अहंकार ॥
मजलस कूड़े लब की पी पी होइ खुआरु ॥
करणी लाहणि सतु गुड़ु
सचु सरा करि सारु ॥
गुण मंडे करि सीलु घिउ
सरमु मासु आहारु ॥
गुरमुखि पाईऐ नानका
खाधै जाहि बिकार ॥ (पन्ना ५५३)

श्री गुरु नानक साहिब जी ने समाज को कुमार्ग पर चलते हुए देख इसके सुधार का मिशन आरंभ किया। सत्य के ज्ञान को लोगों तक पहुँचाने के लिए श्री गुरु नानक पातशाह ने संसार के कोने-कोने में भ्रमण किये। प्रचार-यात्राओं के दौरान उन्होंने भटके हुए लोगों को सही राह पर डाल कर विशुद्ध जीवन जीने की जाच बतायी। सबसे पहले गुरु जी ने ''न को हिंदू न मुसलमान'' का नारा लगाया, क्योंकि दोनों धर्मों के मानव अपने स्वार्थ के लिए अशुभ कर्मों का सहारा ले रहे थे और जीवन के वास्तविक लक्ष्य से भटक चुके थे :

कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥
ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥
जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥
तीने ओजाड़े का बंधु ॥ (पन्ना ६६२)

श्री गुरु नानक साहिब जी ने शुभ कर्मों को अपनी बाणी में विशेष महत्ता दी है। गुरु जी के अनुसार जो व्यक्ति शुभ गुणों का धारक है प्रभु उस व्यक्ति पर कृपा-दृष्टि बनाए रखता है। मनुष्य जन्म बार-बार मिलने का तात्पर्य मनुष्य द्वारा किये अशुभ कर्मों का फल है :

विणु करमा किछु पाईऐ नाही
जे बहुतेरा धावै ॥ (पन्ना ७२२)

तथाकथित शूद्रों पर इतने अत्याचार किये जाते थे कि वे ख़ुद को पशुओं के समान समझने लगे थे। तथाकथित शूद्र हमेशा तथाकथित उच्च जाति के लोगों से डर कर रहा करते थे। सिक्ख धर्म ने तथाकथित शूद्रों को समाज में ऊँचा दर्जा दिलाया। गुरु साहिबान ने निम्न जाने जाते मानव को सबसे

ऊँचा जाना है। श्री गुरु नानक साहिब जी फरमान करते हैं कि हे प्रभु! मैं निम्न से निम्न जाने जाते मनुष्य का संग चाहता हूं। निम्न जाने जाते मनुष्य के अंदर सब्र, संतोष की बहुतायत होती है। मुझे माया के जाल में फंसे मनुष्य के संग की ज़रूरत नहीं है। मैं जानता हूं कि तुम्हारी कृपा उस जगह पर है जहाँ गरीब व्यक्ति की सार ली जाती है, निम्न लोगों के संग विनम्र बन कर उनकी मदद की जाती है :

नीचा अंदरि नीच जाति
नीची हू अति नीचु ॥
नानक तिन कै संगि साथि
वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअनि
तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥ *(पन्ना १५)*

सिक्ख धर्म में सब्र, संतोष, दया, सत्य, परोपकार, ईमानदारी, प्रेम, सेवा आदि को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सम्बन्धित सदाचारक गुण कहा गया है। इसके अलावा समाज की कुरीतियों पर कुठाराघात कर स्त्री वर्ग को ऊँचा दर्जा दिलाना, जाति का भेदभाव ख़त्म कराना, अशुभ कार्यों से वर्जित करना आदि सामाजिक दृष्टिकोण से माने जाने वाले सदाचार के पक्ष हैं। इन गुणों को धारण कर मानव समाज में सम्मानयोग्य स्थान हासिल करता है।

सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ : श्री गुरु नानक साहिब जी ने सामाजिक व्यवस्था को सुधारने के लिए सबसे पहले सर्वसांझीवालता का उपदेश दिया। सिक्खी जीवन-मूलय जाति, रंग, नस्ल के आधार पर विभिन्नतायों को स्वीकृति नहीं देते :

गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥ *(पन्ना ३२४)*

गुरबाणी के अनुसार शरीर रूपी पुतला पाँच तत्वों की सृजना है और सभी मनुष्यों में एक ही ज्योति प्रकाशमान है। इस प्रकार कोई मनुष्य अलग जाति या नस्ल का नहीं हो सकता है। ''क्योंकि मनुष्य का लक्ष्य परमात्मा के दरबार में स्थान प्राप्त करना है। वहाँ जाति नहीं, बल्कि कर्मों के आधार पर निर्णय होता है। इसी कारण वास्तविक पंडित जात-पांत के भेद को नहीं मानता, क्योंकि उसे पता है कि परमात्मा के दरबार में पहुँचते ही (तथाकथित) ऊँची व नीची दोनों जातियों वाले लोग समान आदर के पात्र बनने हैं।''[४]

समानता के अधिकार की बात को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जगह-जगह पर प्रचारित किया गया है। कर्मों के आधार पर ही मुक्ति मिलनी है। जात-पांत को मानना व्यर्थ है। सचखंड का हकदार वही आदमी है जो ऊँच-नीच के शोर से ऊपर उठ कर सबको एक समान समझता है। जात-पांत का भ्रम अहंकार के बंधन में

फंसने के कारण पैदा हुआ है। गुरबाणी को विचार कर इस बंधन से छुटकारा पाया जा सकता है :

जाति बरन कुल सहसा चूका
गुरमति सबदि बीचारी ॥ (पन्ना ११९८)

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु : सत्य की हस्ती को धारण करना मानव का परम कर्त्तव्य माना गया है। सत्य के मार्ग पर चलते हुए चाहे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, मगर व्यक्ति समाज में से इज्जत और सम्मान कमा कर जाता है। श्री गुरु नानक साहिब जी ने विशुद्ध किरदार को जीवन की आवश्यक युक्ति बताया है। सत्य बोलने वाला व्यक्ति ही गुरमुख की पदवी प्राप्त कर सकता है। श्री गुरु नानक साहिब जी ने जीवन के मुख्य उद्देश्य *''किव सचिआरा होईऐ''* के बाद *''हुकमि रजाई चलणा''* की तरफ संकेत करते हुए प्रभु-रज़ा में दिन गुज़ारने की शिक्षा दी है। सत्य के मार्ग तक पहुँचने में कलयुग का बुना माया रूपी जाल रुकावट बनता है। जो मनुष्य अपने आप को सदाचारक जीवन-मूल्यों के अनुसार ढाल लेता है वह सत्य का धारक हो जाता है। संसार में मात्र आध्यात्मिक पदवी की प्राप्ति ही सत्य है, बाकी सब मोह-माया है। सत्य की प्राप्ति के लिए विकारों से दूरी बनाए रखना अति आवश्यक है। सत्य हमेशा असत्य पर विजय प्राप्त करता है; युगों-युगों तक इसका प्रभाव रहता है :

— सचु पुराणा होवै नाही
सीता कदे न पाटै ॥
नानक साहिबु सचो सचा
तिचरु जापी जापै ॥ (पन्ना ९५६)
— एको धरमु द्रिड़ै सचु कोई ॥
गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ (पन्ना ११८८)

सत्य के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति की संगत करने से अन्य कई मानव भी भवसागर पार कर लेते हैं। सदाचार के मार्ग पर चलना चाहे एक संघर्ष है, लेकिन इस संघर्ष में से गुज़र कर ही परम तत्व में लीन हुआ जा सकता है। विशुद्ध आचरण को ग्रहण करना सत्य से भी ऊपर की पदवी को प्राप्त करना है :

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥
(पन्ना ६२)

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु : अच्छे आचरण को धारण करने के लिए गुरु साहिबान ने ज्ञान का मार्ग दर्शाया है, जो अज्ञानी मनुष्य को रौशनी दिखा कर उसकी भटकना ख़त्म करता है। जब मनुष्य को अनुभव हो जाये कि उसका अंतिम लक्ष्य ब्रह्म की प्राप्ति है और वह इस लक्ष्य में सफल हो जाये तो वह बह्मज्ञानी हो जाता है। श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि ब्रह्मज्ञानी अहंकार के बंधन को तोड़ कर गुरमुख के रूप में स्वीकार हो जाता है :

इसु जुग महि को विरला ब्रहम गिआनी
जि हउमै मेटि समाए ॥
नानक तिस नो मिलिआ सदा सुखु पाईऐ
जि अनदिनु हरि नामु धिआए ॥ (पन्ना ५१२)

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ : मनुष्य को गुरु-दर्शाए मार्ग पर चल कर परमात्मा की सेवा करनी चाहिए। गरीबों और दीन-दुखियों की सेवा करने से परमात्मा की बख्शिश प्राप्त होती है। सिक्ख गुरु साहिबान ने परम तत्व की प्राप्ति का प्रारंभिक मार्ग सेवा को ही दर्शाया है। तथाकथित शूद्रों को कथित उच्च श्रेणी के लोगों की सेवा करने का कार्य सौंपा गया था। श्री गुरु नानक साहिब जी ने सेवा के कार्य को उच्च और सम्मान भरा कार्य बताया है :

बिनु सेवा फलु कबहु न पावसि
सेवा करणी सारी ॥ २ ॥
निधनिआ धनु निगुरिआ गुरु
निंमाणिआ तू माणु ॥ (पन्ना ९९२)

सेवा करने से मन को संतुष्टि मिलती है और भटकना ख़त्म होती है। सेवा करने से भेदभाव की भावना ख़त्म होती है। सिक्ख धर्म में भाई घन्हईआ जी सेवा की सबसे बड़ी मिसाल साबित हुए हैं, क्योंकि उन्होंने सिक्ख-मुग़ल युद्ध के दौरान हर ज़ख़्मी व्यक्ति में से दसम पातशाह का स्वरूप देखा। घायल व्यक्ति की सेवा और इलाज कर भाई घन्हईआ जी ने परमात्मा की कृपा प्राप्त की :

जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ
तिसै विटहु कुरबाणु जीउ ॥
ता की सेव करीजै लाहा लीजै
हरि दरगह पाईऐ माणु जीउ ॥
हरि दरगह मानु सोई जनु पावै
जो नरु एकु पछाणै ॥ (पन्ना ४३८)

सतसंगति सतिगुर चटसाल है जितु हरि गुण सिखा : भले पुरुषों की संगत करने को ऐसा गुण माना गया है जिससे विकारों से मुक्ति पाई जा सकती है। संगत करने से शुद्ध विचारों की साझ पैदा होती है। सतिसंगत करने से अहंकार को जड़ से ख़त्म किया जा सकता है। "दरअसल सतिसंगत एक ऐसी प्रयोगशाला है जहाँ मानवीय गुणों का संचार होता है और इन संचारित हुए गुणों को समाज में व्यवहारिक स्तर पर प्रदर्शित किया जाता है, ताकि समाज में गुणों का विकास और अवगुणों का विनाश हो सके।"[५] सतिसंगत द्वारा ब्रह्म-प्राप्ति का मार्ग दिखाया गया है। संगत के साथ आध्यात्मिक ज्ञान हासिल होता है और भेदभाव ख़त्म होता है। संगत करने वाला व्यक्ति जाति, नस्ल, रंग, धर्म को व्यर्थ समझता है। श्री गुरु अरजन देव जी के वचन हैं :

काम क्रोध माइआ मद मतसर
ए खेलत सभि जूऐ हारे ॥
सतु संतोखु दइआ धरमु सचु
इह अपुनै ग्रिह भीतरि वारे ॥ (पन्ना ३७९)

अर्थात् जो मनुष्य भले लोगों की संगत करता है, शुभ वचनों की पालना करता है, वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकारों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। ऐसे मनुष्य के हृदय में सब्र, संतोष, सत्य, दया जैसे शुभ गुणों का निवास हो जाता है।

उपरोक्त अच्छे गुणों को ग्रहण करने वाला व्यक्ति गुरमुख हो जाता है। अनैतिक कार्य करता हुआ व्यक्ति मनमुख की पदवी प्राप्त कर धिक्कार प्राप्त कर लेता है। विकारों में ग्रसित हुआ मनुष्य अशुभ कर्म करने से गुरेज़ नहीं करता। आधुनिक मनुष्य अपने मन के पीछे लग कर मोह-माया के जाल में लीन है और धार्मिक कार्यों से विहीन होता जा रहा है। कन्या भ्रूण-हत्या, पर-स्त्री व पर-पुरुष का गमन, बढ़ रहे नशे के रुझान ने मनुष्य के आध्यात्मिक विकास में रुकावट पैदा की है :

— जितु पीतै मति दूरि होइ
बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई
खसमहु धके खाइ ॥ *(पन्ना ५५४)*

— पोसत भंग सराब दा चलै पिआला भुगत भुंचाइआ।
वजनि बुरगू सिंङीआं संख नाद रहरासि कराइआ। *(वार ३९:१६)*

गुरु साहिबान ने इन विकारों में से निकल कर सभ्य जीवन-जांच के अनुसार जीवन व्यतीत करने की शिक्षा दी है। सत्य की बुनियाद पर शुरू किये हर कार्य को सच्चा कहा है। गुरबाणी द्वारा दर्शाए मार्ग पर चलने से ज़िंदगी में संपूर्णता एवं मुक्ति का मार्ग ग्रहण करने की प्रेरणा मिलती है। सदाचारक गुणों का धारक मनुष्य इस जगत में सम्मान प्राप्त करता है :

सचिआरी सचु संचिआ
साचउ नामु अमोलु ॥
हरि निरमाइलु ऊजलो पति साची सचु बोलु ॥
(पन्ना ९२९)

सहायक-सामग्री :

१. गुरबचन सिंघ तालिब (प्रो.), धर्म दी उत्पत्ति ते विकास, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९८५, पृष्ठ ५९ .
२. हरबंस सिंघ (प्रो.), एल. एम. जोशी (डॉ.), संसार दे धर्म, भाग प्रथम, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृष्ठ २४ .
३. मुहम्मद हबीब (डॉ.), गुरू ग्रंथ साहिब दा नैतिक संसार, डॉ. सरबजिंदर सिंघ (संपा.), नानक प्रकाश पत्रिका, तुक-ततकरा बाणी भक्त नामदेव जी, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, २००२, पृष्ठ १४१.
४. डॉ. जसविंदर कौर (ढिल्लों), गुरु नानक दी कीमत मीमांसा, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, श्री अमृतसर, २०१०, पृष्ठ १२७ .
५. परमवीर सिंघ (डॉ.), श्री गुरु ग्रंथ साहिब : चिंतन अते विचारधारा, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, २०१०, पृष्ठ ४९.

ख़बरनामा

तख़्त श्री हजूर साहिब बोर्ड से सम्बन्धित महाराष्ट्र सरकार का स्पष्टीकरण गुमराहकुन : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब, १० फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने तख़्त श्री हजूर साहिब प्रबंधकीय बोर्ड में सरकार द्वारा नामज़द सदस्यों की संख्या बढ़ाने के मामले में महाराष्ट्र सरकार की ज़िद को सिक्ख भावनाओं की अनदेखी करार दिया है। एडवोकेट धामी ने कहा कि सरकार की तरफ से अब यह कहना कि बोर्ड में केवल सिक्ख सदस्य ही लिए जाएंगे, किसी तरह भी तर्कसंगत नहीं है। उन्होंने महाराष्ट्र सरकार से सवाल किया कि जिन सिक्ख संस्थाओं के सदस्यों की संख्या में कटौती की जा रही है, क्या उनकी तरफ से नामज़द सदस्य सिक्ख नहीं थे?

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि सरकार का स्पष्टीकरण केवल गुमराह करने वाला है, जबकि सच्चाई यह है कि सरकार गुरुद्वारा प्रबंधों को अपने हाथ में लेना चाहती है। उन्होंने कहा कि सरकार को सिक्ख मामलों में इस प्रकार हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, बल्कि सिक्खों के मसले सिक्खों पर ही छोड़ देने चाहिए। सिक्ख जगत की भावनाओं को चोट पहुंचाने से देश में एक विरोधी माहौल की धारा पैदा होती है, जो देश-हित में नहीं है। उन्होंने कहा कि तख़्त श्री हजूर साहिब में सिक्ख संगत का बड़ा समूह सरकार के फ़ैसले के विरुद्ध अपनी भावना प्रकट कर चुका है, जिसे गंभीरता के साथ लेने की ज़रूरत है। महाराष्ट्र सरकार इस पर मंथन करे और प्रतिनिधि सिक्ख संस्थाओं के साथ बैठक कर उनके विचार के अनुसार ही फ़ैसला करे।

एडवोकेट धामी ने कहा कि तख़्त श्री हजूर साहिब सिक्खों के पूजनीय तख़्तों में से एक है, जहाँ के प्रबंध और सेवा-संभाल के लिए १९५६ ई. में बनाए गए एक्ट को खंडित करने और तोड़ने की किसी प्रकार की ज़रूरत महसूस नहीं होती। यह हर पक्ष से सोच-विचार कर ही स्थापित किया गया था। इसमें स्थानीय सिक्खों, नुमाइंदा सिक्ख संस्थाओं, सिक्ख सांसदों के अलावा सरकार के भी प्रतिनिधि शामिल किये गए थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार सिक्ख जगत पर मनमर्जी के फ़ैसले थोपने से गुरेज़ करे। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा इस संबंध में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को पहले ही पत्र लिखा जा चुका है, जिस पर उन्हें तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए।

संघर्ष के मार्ग पर चल रहे किसानों को जबरन रोकने की जगह सरकार उनके मसले हल करे : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब: १३ फरवरी : अपनी माँगों के लिए संघर्ष के मार्ग पर चल रहे किसानों पर हरियाणा सरकार द्वारा बड़ी संख्या में आँसू गैस के गोले फेंकना और पुलिस बल का प्रयोग कर उन्हें दबाना लोकतांत्रिक ढांचे के विरुद्ध है, जिसके लिए केंद्र सरकार को संजीदगी के साथ सोचना

चाहिए।

यह विचार व्यक्त करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि किसान देश की रीढ़ की हड्डी हैं, जिनकी माँगों को अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने किसानों को रोकने के लिए पुलिस-बल के प्रयोग की निंदा करते हुए कहा कि लोकतंत्र में अपने अधिकारों की माँग के लिए शांतमयी प्रदर्शन करना सबका हक है, इसलिए सरकार को किसानों के मसलों को तुरंत हल करना चाहिए न कि उन पर अत्याचार कर मामला और भी उलझाया जाये।

उन्होंने कहा कि लम्बे अरसे से देश के किसान अपने मसलों को लेकर संघर्ष के मार्ग पर अग्रसर हैं, परंतु सरकार द्वारा उदासीनता दिखाई जा रही है। भारत के किसानों को अकेले देश ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के अन्नदाता के तौर पर जाना जाता है। यदि आज किसान संघर्ष के मार्ग पर हैं तो सरकार के लिए सोचने का समय है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि सरकार किसानों को शांतमयी प्रदर्शन करने से जबरन रोकने की जगह उनके मसले हल करने की तरफ ध्यान दे। उन्होंने हरियाणा पुलिस की कार्यवाही में पत्रकारों को भी निशाना बनाए जाने की सख़्त शब्दों में निंदा की।

न्यूजीलैंड के सिक्ख नेताओं ने एडवोकेट धामी के साथ सिक्ख मसलों पर की चर्चा

श्री अमृतसर साहिब : १४ फरवरी : सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में दर्शन करने के लिए आए न्यूजीलैंड की सुप्रीम सिक्ख सोसायटी के मुख्य प्रबंधक स. दलजीत सिंघ ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के साथ मुलाकात कर न्यूजीलैंड में सिक्ख मसलों और सोसायटी द्वारा किये जा रहे कार्यों पर चर्चा की। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने स. दलजीत सिंघ व उनकी टीम द्वारा न्यूजीलैंड में धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए निभाई जा रही सेवाओं की प्रशंसा की।

इस अवसर पर बातचीत करते हुए स. दलजीत सिंघ ने कहा कि हर क्षेत्र में बसते सिक्खों के लिए पंथ की इस महान संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने हर समय आवाज़ उठाई है। संस्था द्वारा मानवता की भलाई के लिए किये कार्यों ने पूरी दुनिया में सिक्ख कौम का नाम ऊँचा किया है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम सिक्ख सोसायटी न्यूजीलैंड में धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए तत्पर है और इस कार्य के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से सहयोग की आशा करती है। उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने स. दलजीत सिंघ व उनके साथ धार्मिक क्षेत्र में सेवा निभाने वाले स. जतिंदर सिंघ को सम्मानित भी किया।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता, सदस्य स. बावा सिंघ गुमानपुरा, सचिव स. प्रताप सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ धामी, अपर सचिव स. सुखमिंदर सिंघ, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

भाई मरदाना जी

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

March 2024

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

सिक्ख जरनैल सरदार बघेल सिंघ
जिन्होंने दिल्ली फतह कर लाल किले पर
खालसाई निशान साहिब फहराया था।

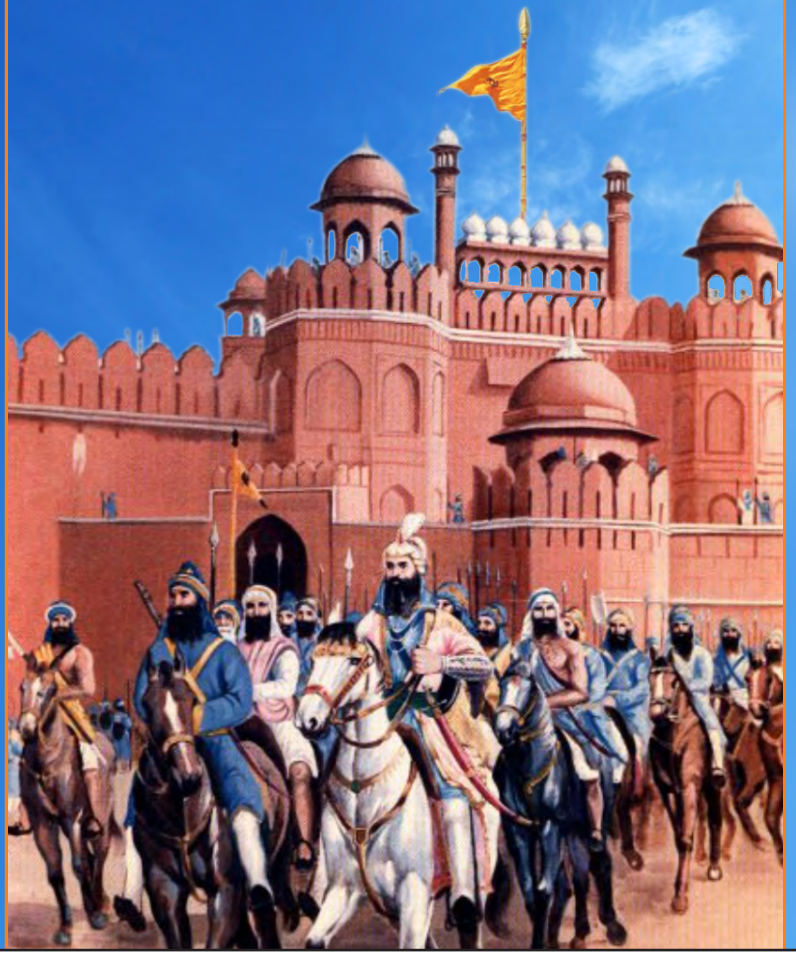

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-3-2024